READ INDIA

संस्कृत गरिमा

प्रवेशिका, प्रथमा, द्वितीया, तृतीया

READ INDIA
An Imprint of Vidyalaya Prakashan
An ISO 9001 : 2008 Certified Co.
NEW DELHI

INDEX

प्रवेशिका	03 – 17
प्रथमा	18 – 39
द्वितीया	40 – 64
तृतीया	65 – 88

Sales Office :
C-24, Jwala Nagar, Transport Nagar, Meerut - 250002
Ph. : 0121 - 2400630, 8899271392
Head Office :
A-102, Chandar Vihar, Delhi - 110092
Website :
www.vidyalayaprakashan.com

दूसरा पाठ :
वर्णमाला

2. एक पद में उत्तर–
   (क) क वर्ग।
   (ख) दन्त से।
   (ग) प वर्ग।
   (घ) अ।
3. (क) अ, आ, ह, अः, क, ख, ग, घ, ङ। इनकी संख्या 9 है।
   (ख) य, र, ल, व।
   (ग) एक–मात्रिक स्वरों के उच्चारण में एक ताली बजने के बराबर समय लगता है जबकि द्विमात्रिक में एक–मात्रिक स्वर का दुगना समय लगता है।
   (घ) ओ, औ

4. (क) बदरः
   (ख) एड़का
   (ग) चञ्चः
   (घ) औपधेयम्

5. (क) झोंपड़ी
   (ख) कबूतर
   (ग) बंदर
   (घ) जुलाहा
   (ङ) साँप
   (च) राकेट

तीसरा पाठ :
यह (एकवचन में)

अयं पाठकः।	यह पाठक है/छात्र है।
अयं पाठकः पठति।	यह छात्र/पाठक पढ़ता है।
अयं शिशुः।	यह बच्चा है।
अयं शिशुः क्रीडति।	यह बच्चा खेलता है।

अयं धीवरः।	यह मल्लाह है।
अयं धीवरः नौकां कर्षति।	यह मल्लाह नाव खेता/चलाता है।
इयम् अक्का।	यह माँ है।
इयम् अक्का पचति।	यह माँ पकाती है।
इयम् आशा।	यह आशा है।
इयम् आशा पचति।	यह आशा पकाती है।
इयं जननी।	यह माँ है।
इयं जननी गर्तं खनति।	यह माँ गड्ढा खोदती है।
इदम् आभूषणम्।	यह गहना है।
इदम् आभूषणं द्योतयति।	यह गहना चमकता है।
इदं पत्रम्।	यह पत्ता है।
इदं पत्रम् हरितम् अस्ति।	यह पत्ता हरा है।
इदं केयूरम्	यह बाजूबंद है।
इदं केयूरम् स्वर्णमण्डितम् अस्ति।	यह बाजूबंद सोने से बना है।

अभ्यास

2. (क) पाठकः। (ख) धीवरः।
   (ग) अक्का। (घ) जननी।
   (ङ) आभूषणं।
3. (क) शिशुः क्रीडति। (ख) अक्का पचति।
   (ग) जननी गर्तं खनति। (घ) केयूरम् स्वर्णमण्डितं अस्ति।
   (ङ) पत्रं हरितम् अस्ति।
4. (क) अयं आम्रः।
   (ख) इयं लत्तिका।
   (ग) इयं छत्रम्।
   (घ) इदं ढक्का अस्ति।
   (ङ) इयं एडकां पश्यति।

5. (क) अयं खगः। (ख) इदम् विमानम्।
(ग) अयं कुम्भकारः। (घ) इयम् अक्का पचति।
(ङ) इयं सीता चलति।

6. (क)	पचति	पच्	अति	च् + अति = चति	पचति
(ख)	खनति	खन्	अति	न् + अति = नति	खनति
(ग)	कर्षति	कर्ष्	अति	र्ष् + अति = र्षति	कर्षति
(घ)	क्रीडति	क्रीड्	अति	ड् + अति = डति	क्रीडति
(ङ)	लिखति	लिख्	अति	ख् + अति = खति	लिखति

चौथा पाठ

यह—द्विवचन में

इमौ पाठकौ।	ये (दो) पाठक/छात्र हैं।
इमौ पाठकौ पठतः।	ये दोनों पाठक/छात्र पढ़ते हैं।
इमौ शिशू।	ये (दो) बच्चे हैं।
इमौ शिशू क्रीडतः।	ये दोनों बच्चे खेलते हैं।
इमौ धीवरौ।	ये (दो) मल्लाह हैं।
इमौ धीवरौ नौके कर्षतः।	ये दोनों मल्लाह नाव खेते/चलाते हैं।
इमे अक्के।	ये (दो) माँ हैं।
इमे अक्के पचतः।	ये दोनों माँएँ पकाती हैं।
इमे महिले।	ये (दो) महिलाएँ हैं।
इमे महिले सज्जां कुरुतः।	ये दोनों महिलाएँ सजावट करती हैं।
इमे जनन्यौ।	ये (दो) माँएँ हैं।
इमे जनन्यौ गर्ते खनतः।	ये दोनों माँएँ गड्ढा खोदती हैं
इमे पत्रे।	ये (दो) पत्ते हैं।
इमे पत्रे हरिते स्तः।	ये दोनों पत्ते हरे हैं।
इमे केयूरे।	ये (दो) बाजूबंद हैं।
इमे केयूरे स्वर्णमण्डिते स्तः।	ये दोनों बाजूबंद सोने से बने हैं।

इमे आभूषणे।	ये दोनों आभूषण हैं।
इमे आभूषणे द्योतयते।	ये दोनों आभूषण चमकते हैं।

अभ्यास

2. (क) पाठकौ। (ख) धीवरौ।
   (ग) अक्के। (घ) जनन्यौ।
   (ङ) आभूषणे।
3. (क) शिशू क्रीडतः।
   (ख) अक्के पचतः।
   (ग) जनन्यौ गर्ते खनतः।
   (घ) पत्रे हरिते स्तः।
   (ङ) केयूरे स्वर्णमण्डिते स्तः।
4. (क) इमौ आम्रौ। (ख) खगौ उत्पततः।
   (ग) कीटीभक्षे स्तः। (घ) छत्रके स्तः।
   (ङ) कपोतौ स्तः। (च) इमौ अकूपारौ चलतः।
5. (क) इमौ खगौ।
   (ख) इमौ विमाने स्तः।
   (ग) इमौ कुम्भ कारौ।
   (घ) रमे माते भोजनं पचतः।
   (ङ) इमे माते।
6. (क) ये दो मोर हैं।
   (ख) ये दोनों पक्षी हैं।
   (ग) ये दोनों आभूषण हैं।
   (घ) ये दोनों मोर नाचते हैं।
   (ङ) वे दोनों लड़किया पढ़ती हैं।
7.

	धातु रूप	धातु	प्रत्यय	स्पष्टीकरण	पद रूप
(क)	क्रीडतः	क्रीड्	अतः	ड् + अ = ड	क्रीडतः
(ख)	कर्षतः	कर्ष्	अतः	र्ष् + अ = र्ष	कर्षतः
(ग)	पचतः	पच्	अतः	च् + अ = च	पचतः

(घ) खनतः खन् अतः न् + अ = न खनतः

(ङ) चलतः चल् अतः ल् + अ = ल चलतः

पाँचवाँ पाठ :

यह—बहुवचन में

इमे पाठकाः।	ये छात्र हैं।
इमे पाठकाः पठन्ति।	ये छात्र पढ़ते हैं।
इमे शिशवः।	ये बच्चे हैं।
इमे शिशवः क्रीडन्ति।	ये बच्चे खेलते हैं।
इमे धीवराः।	ये मल्लाह हैं।
इमे धीवराः नौकाः कर्षन्ति।	ये मल्लाह नाव खेते/चलाते हैं।
इमाः अक्काः।	ये माँएँ हैं।
इमाः अक्काः पचन्ति।	ये माँएँ पकाती हैं।
इमाः महिलाः।	ये महिलाएँ हैं।
इमाः महिलाः सज्जाः कुर्वन्ति।	ये महिलाएँ सजावट करती हैं।
इमाः जनन्याः।	ये माँएँ हैं।
इमाः जनन्याः गर्ताः खनन्ति।	ये माँएँ गड्ढे खोदती हैं।
इमानि आभूषणानि।	ये आभूषण हैं।
इमानि आभूषणानि द्योतयन्ति।	ये आभूषण चमकते हैं।
इमानि पत्राणि।	ये पत्ते हैं।
इमानि पत्राणि हरितानि सन्ति।	ये पत्ते हरे हैं।
इमानि केयूराणि।	ये बाजूबंद हैं।
इमानि केयूराणि स्वर्णमण्डितानि सन्ति।	ये बाजूबंद सोने के बने हैं।

अभ्यास

2. (क) पाठकाः (ख) धीवराः
   (ग) अक्काः (घ) जनन्याः
   (ङ) आभूषणानि
3. (क) शिशवः क्रीडन्ति।

(ख) अक्काः पचन्ति।

(ग) जनन्याः गर्ताः खनन्ति।

(घ) पत्राणि हरितानि सन्ति।

(ङ) केयूराणि स्वर्णमण्डितानि सन्ति।

4. (क) इमे आम्राः

(ख) इमे कपोताः खादन्ति।

(ग) इमाः लत्तिकाः सन्ति।

(घ) इमानि छत्राणि सन्ति।

(ङ) इमे खगाः सन्ति।

(च) इमे कच्छपाः चलन्ति।

5. (क) इमे खगाः।

(ख) इमानि विमानानि।

(ग) इमे कुम्भकाराः।

(घ) इमाः अक्काः।

(ङ) इमाः अक्काः भोजनं पचन्ति।

6. (क) ये मोर हैं। (ख) ये पक्षी उड़ते हैं।

(ग) ये आभूषण सुंदर हैं। (घ) वे स्त्रियाँ जाती हैं।

(ङ) वे लड़कियाँ खेलती हैं।

7.

	धातु रूप	धातु	प्रत्यय	स्पष्टीकरण	पद रूप
(क)	क्रीडन्तिः	क्रीड्	अन्ति	ड् + अ = ड	क्रीडन्तिः
(ख)	कर्षन्तिः	कर्ष्	अन्ति	र्ष् + अ = र्ष	कर्षन्तिः
(ग)	पचन्तिः	पच्	अन्ति	च् + अ = च	पचन्तिः
(घ)	खनन्तिः	खन्	अन्ति	न् + अ = न	खनन्तिः
(ङ)	चलन्तिः	चल्	अन्ति	ल् + अ = ल	चलन्तिः

छठा पाठ :
यहाँ और वहाँ (पहला भाग)

अत्र धेनुः चरति।	यहाँ गाय चरती है।
तत्र गजः खादति।	वहाँ हाथी खाता है।
अत्र राधा पठति।	यहाँ राधा पढ़ती है।
तत्र सुमितः क्रीडति।	वहाँ सुमित खेलता है।
अत्र ओकः अस्ति।	यहाँ घर है।
तत्र शिवालयः अस्ति।	वहाँ शिवालय है।
अत्र उत्सारकः भारं वहति।	यहाँ कुली भार ढोता है।
तत्र रजकः वस्त्राणि प्रक्षालयति।	वहाँ धोबी कपड़े धोता है।
अत्र फलं पतति।	यहाँ फल गिरता है।
तत्र कन्दुकं पतति।	वहाँ गेंद गिरती है।
अत्र वर्तिका तरति।	यहाँ बत्तख तैरती है।
तत्र मकरः तरति।	वहाँ मगरमच्छ तैरता है।
अत्र मयूरः केकयति।	यहाँ मोर बोलता है।
तत्र पयोधरः गर्जन्ति।	वहाँ बादल गरजते हैं।
अत्र अजकः कूर्दति।	यहाँ मेमना कूदता है।
तत्र मृगः कूर्दति।	वहाँ हिरन कूदता है।
अत्र छात्रः आगच्छति।	यहाँ छात्र आता है।
तत्र छात्रा गच्छति।	वहाँ छात्रा जाती है।
अत्र दर्दुरः तरति।	यहाँ मेढक तैरता है।
तत्र कमलं विकसति।	वहाँ कमल खिलता है।

अभ्यास

1. (ग) अत्र मयूरः केकयति।
   (ख) तत्र मीरा क्रीडति।
   (ख) अत्र वानरः कूर्दति।
   (ग) अत्र पुष्पं विकसति।

2. (क) अत्र दर्दुरः तरति।
   (ख) तत्र मयूरः नृत्यति।
   (ग) अत्र वर्तिका धावति।
   (घ) तत्र बालिका क्रीडति।

3. (क) गच्छति। (ख) प्रक्षालयति।
   (ग) खादति। (घ) पठति।

4. (क) अत्र (ख) तत्र
   (ग) अत्र (घ) तत्र

5. (क) धेनुः (ख) उत्सारकः
   (ग) रजकः (घ) छात्रः
   (ङ) अजकः

सातवाँ पाठ :
यहाँ और वहाँ (दूसरा भाग)

अत्र धेनवः चरन्ति।	यहाँ गायें चरती हैं।
तत्र गजाः खादन्ति।	वहाँ हाथी खाते हैं।
अत्र उत्सारकाः भारं वहन्ति।	यहाँ कुली भार ढोते हैं।
तत्र रजकाः वस्त्राणि प्रक्षालयन्ति।	वहाँ धोबी कपड़े धोते हैं।
अत्र कण्डीलाः गच्छन्ति।	यहाँ ऊँट जाते हैं।
तत्र मृगाः धावन्ति।	वहाँ हिरन दौड़ते हैं।
अत्र मूषकाः धावन्ति।	यहाँ चूहे दौड़ते हैं।
तत्र बिडालाः सन्ति।	वहाँ बिल्ली हैं।
अत्र पत्राणि पतन्ति।	यहाँ पत्ते गिरते हैं।
तत्र कन्दुकानि पतन्ति।	वहाँ गेदें गिरती हैं।
अत्र वर्तिकाः तरन्ति।	यहाँ बत्तखें तैरती हैं।
तत्र अजाः चरन्ति।	वहाँ बकरियाँ चरती हैं।
अत्र छात्राः आगच्छन्ति।	यहाँ छात्र आते हैं।
तत्र बालिकाः गच्छन्ति।	वहाँ लड़कियाँ जाती हैं।

अत्र अजकाः कूर्दन्ति।	यहाँ मेमने कूदते हैं।
तत्र वर्तिकाः तरन्ति।	वहाँ बतखें तैरती हैं
अत्र मयूराः केकयन्ति।	यहाँ मोर बोलते हैं।
तत्र मेघाः गर्जन्ति।	वहाँ बादल गरजते हैं।
अत्र बालिकाः क्रीडन्ति।	यहाँ लड़कियाँ खेलती हैं।
तत्र बालकाः धावन्ति।	वहाँ लड़के दौड़ते हैं

अभ्यास

1. (ख) अत्र रजकाः प्रक्षालयन्ति।
   (ख) तत्र अजाः धावन्ति।
   (क) तत्र बालकाः खादन्ति।
   (ख) अत्र वृषभाः चरन्ति।
2. (क) कपोताः (ख) बिडालाः
   (ग) कण्डीलाः (घ) बालकाः
3. (क) अत्र कुक्कुराः धावन्ति।
   (ख) तत्र मयूराः सन्ति।
   (ग) तत्र नौकाः सन्ति।
   (घ) अत्र सिंहाः सन्ति।

आठवाँ पाठ :
वह (एकवचन में)

सः मूषकः अस्ति।	वह चूहा है।
सः खादति।	वह खाता है।
सः अश्वः अस्ति।	वह घोड़ा है।
सः धावति।	वह दौड़ता है।
सः भुजंगः अस्ति।	वह साँप है।
सः फुत्करोति।	वह फुँकारता है।
सा कन्या अस्ति।	वह लड़की है।
सा रोदिति।	वह रोती है।

सा दुर्गा अस्ति।	वह दुर्गा है।
सा दैत्यं संहरति।	वह राक्षस का संहार करती है।
सा कमला अस्ति।	वह कमला है।
सा मृदंगं वादयति।	वह तबला बजाती है।
तत् वस्त्रम् अस्ति।	वह कपड़ा है।
तत् आच्छादनाय अस्ति।	वह ढकने के लिए है।
तत् लवणम् अस्ति।	वह नमक है।
तत् तिक्तम् अस्ति।	वह नमकीन है।
तत् पुष्पम् अस्ति।	वह फूल है।
तत् सुगंधयुतम् अस्ति।	वह सुगंधयुक्त है।

अभ्यास

2. (क) धावति। (ख) भुजंगः
   (ग) वस्त्रम् (घ) लवणम्
   (ङ) पुष्पम्
3. (क) सः मूषकः खादति।
   (ख) दुर्गा दैत्यं संहरति।
   (ग) निर्मला मृदंगं वादयति।
   (घ) तत् वस्त्रं आच्छादनाय अस्ति।
   (ङ) तत् पुष्पं सुगन्धयुक्तम् अस्ति।
4. (क) वह चूहा खाता है।
   (ख) वह घोड़ा दौड़ता है।
   (ग) वह कन्या संहार करती है।
   (घ) वह दुर्गा है।
   (ङ) वह बाँसुरी बजाती है।
5. (क) सः एकः मूषकः अस्ति।
   (ख) सः भुजंगः फुत्करोति।

(ग) सा दुर्गा न अस्ति।

(घ) सा बालिका वीणां वादयति।

(ङ) तत् लवणं तिक्तम् अस्ति।

6. (क) सः मूषकः। (ख) सा अजा।

(ग) तत् लवणम्। (घ) लवणं तिक्तं भवति।

(ङ) तत् मधुरं जलम् अस्ति।

नौवाँ पाठ :

वह (द्विवचन में)

तौ मूषकोः स्तः।	वे दोनों चूहे हैं।
तौ खादतः।	वे दोनों खाते हैं।
तौ अश्वौ स्तः।	वे दोनों घोड़े हैं।
तौ धावतः।	वे दोनों दौड़ते हैं।
तौ भुजंगौ स्तः।	वे दोनों साँप हैं।
तौ फुत्कुरुतः।	वे दोनों फुँकारते हैं।
ते कन्ये स्तः।	वे दोनों लड़कियाँ हैं।
ते रुदितः।	वे दोनों रोती हैं।
ते अबले स्तः।	वे दोनों स्त्रियाँ हैं।
ते मृदंगौ वादयतः।	वे दोनों तबला बजाती हैं।
ते कन्ये स्तः।	वे दोनों कन्याएँ हैं।
ते नृत्यतः।	वे दोनों नाचती हैं।
ते वस्त्रे स्तः।	वे दोनों वस्त्र हैं।
ते आच्छादनाय स्तः।	वे दोनों ढकने के लिए हैं।
ते कमले स्तः।	वे दोनों कमल हैं
ते जले स्तः।	वे दोनों पानी में हैं
ते पुष्पे स्तः।	वे दोनों फूल हैं।
ते सुगंधयुक्ते स्तः।	वे दोनों सुगंधयुक्त हैं।

अभ्यास

2. (क) खादतः (ख) कन्ये
   (ग) कन्ये (घ) जले
   (ङ) सुगंधयुक्ते
3. (क) तौ अश्वौ धावतः।
   (ख) तौ भुजंगौः फुत्कुरुतः।
   (ग) अबले मृदंगौ वादयतः।
   (घ) ते वस्त्रे आच्छादनाय स्तः।
   (ङ) ते जले कमले स्तः।
4. (क) वे दो चूहे हैं
   (ख) वे दो साँप फुँकारते हैं।
   (ग) वे दो कन्या रोती हैं।
   (घ) वे दो बालिका नाचती हैं।
   (ङ) वे दो घर हैं।
5. (क) तौ बालौ क्रीडतः।
   (ख) तौ वृषभौ फुत्कुरुतः।
   (ग) ते बालिके धावतः।
   (घ) ते मृदंगौ वादयतः।
   (ङ) तौ नृत्यतः।
6. (क) ते पठतः। (ख) तौ लिखतः।
   (ग) ते मृदंगौ वादयतः। (घ) तौ धावतः।
   (ङ) तौ क्रीडतः।

दसवाँ पाठ :
वह (बहुवचन में)

ते मूषकाः सन्ति। वे चूहे हैं।
ते खादन्ति। वे खाते हैं।
ते अश्वाः सन्ति। वे घोड़े हैं।

ते धावन्ति।	वे दौड़ते हैं।
ते भुजंगाः सन्ति।	वे साँप हैं।
ते फुत्कुर्वन्ति।	वे फुँकारते हैं।
ताः कन्याः सन्ति।	वे लड़कियाँ हैं।
ताः रुदन्ति।	वे रोती हैं।
ताः अबलाः सन्ति।	वे स्त्रियाँ हैं।
ते मृदंगान् वादयन्ति।	वे तबले बजाती हैं।
ताः कन्याः सन्ति।	वे लड़कियाँ हैं।
ताः नृत्यन्ति।	वह नाचती हैं।
तानि वस्त्राणि सन्ति।	वे कपड़े हैं।
तानि आच्छादनाय सन्ति।	वे ढकने के लिए हैं।
तानि कमलानि सन्ति।	वे कमल हैं।
तानि जले सन्ति।	वे पानी में हैं।
तानि पुष्पाणि सन्ति।	वे फूल हैं।
तानि सुगन्धयुक्तानि सन्ति।	वे सुगन्धयुक्त हैं।

अभ्यास

2. (क) खादन्ति। (ख) भुजंगाः
   (ग) कन्याः (घ) वस्त्राणि
   (ङ) पुष्पाणि
3. (क) अश्वाः धावन्ति। (ख) भुजंगाः फुत्कुर्वन्ति।
   (ग) कन्याः रुदन्ति। (घ) अबलाः मृदंगान् वादयन्ति।
   (ङ) तानि कमलानि जले सन्ति।
4. (क) वे घोड़े हैं। (ख) वे कन्याएँ हैं।
   वे दौड़ते हैं। वे रोती हैं।
   (ग) वे फूल हैं।
   वे सुगंधयुक्त हैं।
5. (क) ते मयूराः सन्ति। (ख) ते सारमेयाः सन्ति।
   (ग) ते/ताः कोकिलाः सन्ति। (घ) ताः अबलाः सन्ति।

(ङ) ताः धेनवाः सन्ति। (च) तानि उद्यानानि सन्ति।

ग्यारहवाँ पाठ :
दो सखियाँ

संकेत : ललिता गीता ----------गायकौ स्तः।

अर्थ–ललिता और गीता सखियाँ हैं। वे पाँचवीं कक्षा में पढ़ती हैं। ललिता के दो भाई हैं। पहला पटना नगर में रहता है। दूसरा मेरठ नगर में रहता है। वे दोनों भाई गायक हैं।

संकेत : ते द्वे सख्यौ ----------स्मरतः।

अर्थ–वे दोनों सखियाँ प्रातः घूमने के लिए जाती हैं। वे दोनों सखियाँ बगीचे में घूमती हैं। बाद में वे विद्यालय जाती हैं। ललिता और गीता वहाँ पढ़ती हैं। वे दोनो पाठ याद करती हैं।

संकेत : गीतायाः द्वौ ----------च स्तः।

अर्थ–गीता के दो भाई हैं। पहला सतीश और दूसरा गिरीश है। वे दोनों भाई ब्रह्ममुहुर्त में उठते हैं। वे दोनों ईश्वर भक्त, विनम्र और सरल हैं।

अभ्यास

2. (क) पञ्चमी (ख) प्रातः
   (ग) विद्यालयम् (घ) गीतायाः भ्राता
3. (क) ललिताया भ्रातरौ; प्रथमः पटना नगरे अपरे च मेरठ नगरे वसति।
   (ख) ललिता गीता च उद्यानं प्रातः भ्रमतः।
   (ग) विद्यालये गीता ललिता च पठतः।
   (घ) गीतायाः भ्रातरौ नाम–सतीशः गिरीशः च।
4. (क) गीता शैला च मेरठ नगरे वसतः।
   (ख) सीता गीता च सख्यौ स्तः।
   (ग) रामः श्यामः च भ्रातरौ स्तः।
   (घ) गोपालः रूपा च गच्छतः।

5. (क) शीला अथवा मीरा आती/आ रही है।
   (ख) दूसरा मेरठ शहर में रहता है।
   (ग) बाद में वे (दोनों) विद्यालय जाती हैं
   (घ) गीता के दो भाई हैं।
6. (क) तौ विनम्रौ स्तः।
   (ख) सीता-रामौः गच्छतः।

दूसरा पाठ :
(यह - वह)

एषः पाठकः।	यह पाठक/छात्र हैं।
पाठकः पठति।	छात्र/पाठक पढ़ता है।
पाठकः किं करोति?	छात्र/पाठक क्या करता है?
सः पठति।	वह पढ़ता है।
एषः विवेकः।	यह विवेक है।
विवेकः गायति।	विवेक गाता है।
विवेकः किं करोति?	विवेक क्या करता है?
विवेकः गायति।	विवेक गाता है।
एषः आचार्यः।	यह अध्यापक है।
किम् आचार्यः पठति?	क्या अध्यापक पढ़ता है?
नहि, आचार्यः न पठति।	नहीं, अध्यापक नहीं पढ़ता है।
सः पाठयति।	वह पढ़ाता है।
एषः वैद्यः।	यह चिकित्सक है।
किं वैद्यः शयनं करोति?	क्या चिकित्सक सोता है?
नहि, वैद्यः शयनं न करोति।	नहीं, चिकित्सक नहीं सोता है।
सः चिकित्सयति।	वह चिकित्सा करता है।
एषः रञ्जकः।	यह चित्रकार है।
रञ्जकः रञ्जति।	चित्रकार रंगता है।
रञ्जकः किं रञ्जति?	चित्रकार क्या रंगता है?
सः चित्रं रञ्जति।	चित्रकार चित्र रंगता है।
एषा कमला।	यह कमला है।
कमला पाठिका अस्ति।	कमला छात्रा है।
कमला किं न करोति?	कमला क्या नहीं करती है?
सा न लिखति।	वह नहीं लिखती है।
किं कमला लिखति?	क्या कमला लिखती है?

कमला न लिखति।	कमला नहीं लिखती है।
सा पठति।	वह पढ़ती है।
एषा अम्बा। अम्बा पचति।	यह माता है। माता पकाती है।
किम् अम्बा गायति?	क्या माँ गाती है।
अम्बा न गायति। सा पचति।	माता गाती नहीं है। वह पकाती है।
अम्बा किं पचति?	माता क्या पकाती है?
सा ओदनं पचति।	वह चावल पकाती है।
एषा आचार्या।	यह शिक्षिका है।
आचार्या पाठयति।	शिक्षिका पढ़ाती है।
आचार्या किं पाठयति?	शिक्षिका क्या पढ़ाती है?
सा संस्कृतं पाठयति।	वह संस्कृत पढ़ाती है।
एषा बालिका	यह लड़की है।
एषा बालिका खेलति।	यह लड़की खेलती है।
बालिका किं करोति?	लड़की क्या करती है?
सा खेलति।	वह खेलती है।

अभ्यास

1. (क) सः पठति। (ख) सा नमति।
   (ग) सः लिखति। (घ) सा चलति।
2. (क) एषः बालकः। (ख) सः छात्रः।
   (ग) आलोकः पठति। (घ) मेघा गच्छति।
   (ङ) स्नेहा पाठ्यति। (च) सः कृष्णः किं करोति?
3. (क) प्रभातः पाठयति। (ख) नगमा लिखति।
   (ग) रेखा गायति। (घ) शिक्षिका पाठयति।

4. **पुंल्लिग स्तम्भः** **स्त्रीलिंग स्तम्भः**

गौरवः	मेघा
अजः	गरिमा
चिकित्सकः	परिचायिका
गोपालः	धरा
रमेशः	अजा
छात्रः	माला

5. (क) सा (ख) सः
   किं किम्ः
   मेघा प्रणवः
   (ग) एषा (घ) एषः
   किं किं
   सा सः

6. (क) पाठकः पठति। (ख) विवेकः गायति।
   (ग) आचार्यः पाठयति। (घ) कमला न लिखति।
   (ङ) अम्बा न गायति।

तीसरा पाठ :
ये/ये सब अथवा वे / वे सब

एते कण्ठीलाः।	ये ऊँट हैं।
कण्ठीलाः गच्छन्ति।	ऊँट जाते हैं।
किं कण्ठीलाः धावन्ति?	क्या ऊँट दौड़ते हैं?
नहि, कण्ठीलाः न धावन्ति।	नहीं, ऊँट नहीं दौड़ते हैं।
ते गच्छन्ति।	वे जाते हैं।
ते कण्ठीलाः चलन्ति।	वे ऊँट चलते हैं।
एते खचराः।	ये पक्षी हैं।
खचराः उत्पतन्ति तिष्ठन्ति च।	पक्षी उड़ते और बैठते हैं।
अधुना खचराः किं कुर्वन्ति?	अब पक्षी क्या करते हैं?

अधुना ते उत्पतन्ति तिष्ठन्ति च।	अब वे उड़ते और बैठते हैं।
खचराः प्रातः उत्पतन्ति।	पक्षी प्रातः उड़ते हैं।
ते प्रातः उत्पतन्ति।	वे प्रातः उड़ते हैं।
अधुना धावस्पर्धा।	अब दौड़ प्रतियोगिता है।
अश्वाः धावस्पर्धां कुर्वन्ति।	घोड़े दौड़ प्रतियोगिता करते हैं।
ते धावस्पर्धां कुर्वन्ति।	वे दौड़ प्रतियोगिता करते हैं।
ते अश्वाः धावन्ति।	वे घोड़े दौड़ते हैं।
एताः अजाः।	ये बकरियाँ हैं।
अजाः चरन्ति।	बकरियाँ चरती हैं।
अजाः किं कुर्वन्ति?	बकरियाँ क्या करती हैं?
ताः तृणाः चरन्ति।	वे घास चरती हैं।
शिप्रा, मृणाला, प्रज्ञा च कूर्दन्ति।	शिप्रा, मृणाला और प्रज्ञा कूदती हैं।
शिप्रा, प्रज्ञा, मृणाला च किं कुर्वन्ति।	शिप्रा, प्रज्ञा और मृणाला क्या करती हैं?
ताः कूर्दन्ति।	वे कूदती हैं।
एताः गायिकाः।	ये गायिकाएँ हैं।
गायिकाः किं कुर्वन्ति?	गायिकाएँ क्या करती हैं?
गायिकाः गायन्ति।	गायिकाएँ गाती हैं।
किं गायिकाः नृत्यन्ति?	क्या गायिकाएँ नृत्य करती हैं?
नहि, गायिकाः न नृत्यन्ति।	नहीं, गायिकाएँ नृत्य नहीं करती हैं।
ताः गायन्ति।	वे गाती हैं।
एताः पिपीलिकाः।	ये चीटिंयाँ हैं।
पिपीलिकाः किं कुर्वन्ति?	चीटियाँ क्या करती हैं?
पिपीलिकाः चलन्ति।	चीटियाँ चलती हैं।
किं पिपीलिकाः धावन्ति?	क्या चीटियाँ दौड़ती हैं?
नहि, पिपीलिकाः न धावन्ति।	नहीं, चीटियाँ दौड़ती नहीं हैं।
ताः चलन्ति।	वे चलती हैं।
एताः बालिकाः।	ये लड़कियाँ हैं।
बालिकाः किं कुर्वन्ति?	लड़कियाँ क्या करती हैं?
बालिकाः नृत्यन्ति।	लड़कियाँ नाचती हैं।

किं बालिकाः नमन्ति?
नहि, बालिकाः न नमन्ति।
ताः नृत्यन्ति।

क्या लड़कियाँ नमस्कार करती हैं?
नहीं, लड़कियाँ नमस्कार नहीं करती हैं।
वे नाचती हैं।

अभ्यास

1. (क) ताः (ख) ते
   (ग) ताः (घ) ते
2. (क) एषा (ख) एषा
   (ग) एते (घ) एते
   (ङ) एषः (च) एषः
3. (अ) (क) बालकः क्रीडति।

   (ख) बालिकाः नृत्यन्ति।

   (ग) प्रमिला आगच्छति।

   (घ) राधा तरति।

   (ङ) रामः पतति।

   (ब) (क) कण्डीला गच्छन्ति
   (ख) खचराः उत्पतन्ति
   (ग) अजाः चरन्ति
   (घ) गायिकाः गायन्ति
   (ङ) पिपीलिकाः चलन्ति
4. (क) बालिकाः पतन्ति। (ख) मयूरः नृत्यति।
   (ग) खचरः उत्पति। (घ) सा नृत्यति।
   (ङ) ताः नृत्यन्ति।
5. (क) अन्ति पठन्ति (ख) अन्ति पतन्ति
   (ग) अन्ति गच्छन्ति (घ) अन्ति धावन्ति

(ङ)	अन्ति	लिखन्ति	(च)	अन्ति	नृत्यन्ति
(छ)	अन्ति	हसन्ति	(ज)	अन्ति	भवन्ति
(झ)	अन्ति	नमन्ति	(ञ)	अन्ति	क्रीडन्ति

चौथा पाठ :
मैं और तुम

मयंकः लिखति।	मयंक लिखता है।
त्वं किं करोषि?	तुम क्या करते/करती हो?
अहम् अपि लिखामि।	मैं भी लिखता/लिखती हूँ।
गरिमा नमति।	गरिमा नमस्कार करती है।
किं त्वं नमसि?	क्या तुम नमस्कार करते/करती हो?
आम्, अहं नमामि।	हाँ, मैं नमस्कार करता/करती हूँ।
पाठकः प्रातः पठति।	पाठक प्रातः पढ़ता है।
किं त्वं प्रातः पठसि?	क्या तुम भी प्रातः पढ़ते/पढ़ती हो?
आम्, अहम् अपि प्रातः पठामि।	हाँ, मैं भी प्रातः पढ़ता/पढ़ती हूँ।
अम्बा ओदनं पचति।	माता चावल पकाती है।
अहम् ओदनं न पचामि।	मैं चावल नहीं पकाता/पकाती हूँ।
किं त्वम् ओदनं पचसि?	क्या तुम चावल पकाते/पकाती हो?
नहि, अहं भोजनं पचामि।	नहीं, मैं खाना पकाता/पकाती हूँ।
विभा दुग्धं पिबति।	विभा दूध पीती है।
किं त्वं दुग्धं पिबसि?	क्या तुम दूध पीते/पीती हो?
नहि, अहं मधुपेयं पिबामि।	नहीं, मैं शरबत पीता/पीती हूँ।
सुमितः हसति।	सुमित हँसता है।
किं त्वं हससि?	क्या तुम हँसते/हँसती हो?
आम्, अहं हसामि।	हाँ, मैं हँसता/हँसती हूँ।
त्वं कुत्र गच्छसि?	तुम कहाँ जा रहे/रही हो?
अहं विद्यालयं गच्छामि।	मैं विद्यालय जा रहा/रही हूँ।
तत्र त्वं किं करोषि?	वहाँ तुम क्या करते/करती हो?

तत्र अहं पठामि।	वहाँ मैं पढ़ता/पढ़ती हूँ।
तत्र अहं संस्कृतं पठामि।	वहाँ मैं संस्कृत पढ़ता/पढ़ती हूँ।
तत्र अहं क्रीडामि।	वहाँ मैं खेलता/खेलती हूँ।

अभ्यास

1. (क) अहं पचामि। (ख) अहं
   (ग) लिखसि। (घ) त्वं
   अहं भ्रमामि।
   (ङ) त्वं (च) अहं गच्छामि।
   खेलामि।
2. (क) सः , लिखसि , आम् (ख) पठसि, किं, नहि
3. सः गच्छति
   सा पचति
   ते (पुंल्लिंग) खादन्ति
   ते (स्त्रीलिंग) नृत्यतः
   तौ खादतः
   त्वम् पिबसि
   अहं यच्छामि
4. (क) पठति (ख) पचति
   (ग) कुर्वन्ति (घ) गच्छतः
   (ङ) लिखतः (च) क्रीडामि
   (छ) नमन्ति (ज) पठसि
5. (क) पठसि (ख) त्वम्
   अहं खादामि
   (ग) पिबसि (घ) त्वं , यच्छसि
   जलं जलं
   (ङ) क्रीडसि (च) नृत्यसि
   अहं नहिं,

पञ्चम पाठ :
कालांशम्–वेला

अधुना संस्कृतवेला।	इस समय संस्कृत वेला है।
तत्र बालकाः संस्कृतं पठन्ति।	वहाँ लड़के संस्कृत पढ़ते हैं।
ते परस्परं संस्कृतं वदन्ति।	वे आपस में संस्कृत बोलते हैं।
पश्चात् बालिकाः क्रीडन्ति।	बाद में लड़कियाँ खेलती हैं।
बालिका–यूयं किं कुरुथ?	लड़की–तुम सब क्या कर रही हो?
बालिकाः–वयं सज्जाः भवामः।	लड़कियाँ–हम सब सजावट (तैयारी कर रहे हैं)।
बालिका–यूयं किं क्रीडथ?	लड़की–तुम सब क्या खेलती हो?
बालिकाः–अद्य वयं फलककंदुकं क्रीडामः।	लड़किया – आज हम सब टेबिल–टेनिस खेलते हैं।
(क्रीडाचार्यः आगच्छति)	(खेल के अध्यापक आते हैं।)
क्रीडाचार्यः–(छात्रान् प्रति) किं यूयम् अपि सज्जाः भवथ?	क्रीडाध्यापक–(छात्रों से) क्या तुम भी तैयार होते हो?
बालकाः–आम्, श्रीमान! वयम् अपि सज्जाः भवामः। अद्य वयं फलककंदुकं क्रीडामः।	लड़के–हाँ श्रीमान् हम भी तैयार हो रहे हैं। आज हम सब टेबिल–टेनिस खेल रहे हैं।
क्रीडाचार्यः–शोभनम्।	क्रीडाध्यापक–सही है।
अधुना भोजनवेला। तत्र बालकाः भोजनं खादन्ति।	(अब खाने की वेला है। वहाँ लड़के खाना खाते हैं)
शिक्षिका–किं यूयं प्रतिदिनं पोलिकां खादथ?	अध्यापिका–क्या तुम सब रोज रोटी खाते हो?
बालकाः–आम्, वयं प्रतिदिनं पोलिकां खादामः।	लड़के–हाँ हम सब रोज रोटी खाते हैं।
शिक्षिका–किं यूयं प्रतिदिनं भातं खादथ?	अध्यापिका–क्या तुम सब प्रतिदिन चावल खाते हो?

छात्रा:—नहि, वयं प्रतिदिनं भातं न खादाम:।	छात्र—नहीं, हम सब प्रतिदिन चावल नहीं खाते हैं।
शिक्षिका—किं यूयं गायथ?	अध्यापिका—क्या तुम सब गाते हो?
छात्रा:—नहि, वयं न गायाम:, वयं नृत्याम:। नाचते	छात्र—नहीं, हम नहीं गाते हैं, हम हैं।
शिक्षिका—किं यूयं तरथ?	अध्यापक—क्या तुम सब तैरते हो?
छात्रा:—आम्, वयं तराम:। वयं जलाशये तराम:।	छात्र—हाँ, हम सब तैरते हैं। हम तालाब में तैरते हैं।
शिक्षिका—यूयं कुत्र तरथ?	अध्यापिका—तुम सब कहाँ तैरते हो?
छात्रा:—अत्र तरणताल: अस्ति। वयं तत्र तराम:।	छात्र—यह स्वीमिंग पुल है। हम वहाँ तैरते हैं।

अभ्यास

2.	(क)	क्रीडथ वयं	(ख)	यूयं वयं
	(ग)	हसथ वयं	(घ)	यूयं गायाम:। वयं
3.	(क)	यदा ; तदा	(ख)	यदा ; तदा
	(ग)	यदा ; तदा	(घ)	यदा ; तदा
4.	(क)	वयं खादाम्	(ख)	यूयं किं लिखथ?
	(ग)	ता: कुत्र गच्छन्ति?	(घ)	ते लिखन्ति।

छठा पाठ :
(दो) करते/करती हैं

इमौ पाठकौ।	ये दोनों छात्र हैं।
इमौ पाठकौ किं कुरुत:?	ये दोनों छात्र क्या करते हैं?
इमौ पाठकौ सुलेखं कुरुत:।	ये दोनों छात्र सुलेख करते हैं।
श्रेष्ठ: पाठक: सुलेखं प्रकरोति।	श्रेष्ठ छात्र सुलेख विशेष रूप से करते हैं।
कमल: सुलेखं प्रकरोति।	कमल सुलेख विशेष रूप से करता है।

इमौ अन्वेषकौ।	ये दोनों खोज करने वाले (खोजी) हैं।
इमौ अन्वेषकौ किं कुरुतः?	ये दोनों खोजी क्या करते हैं?
इमौ अन्वेषकौ आविष्कुरुतः।	ये दोनों खोजी आविष्कार करते हैं।
तौ आविष्कुरुतः।	वे दोनों आविष्कार करते हैं।
आवाम् आविष्कुर्वः।	हम दोनों आविष्कार करते हैं।
इमौ मूषकौ।	ये दोनों चूहे हैं।
इमौ मूषकौ किं कुरुतः?	ये दोनों चूहे क्या करते हैं।
इमौ मूषकौ उत्कुरुतः।	ये दोनों चूहे खोदते हैं।
इमे बालिके।	ये दोनों लड़कियाँ हैं
इमे बालिके किं कुरुतः?	ये दोनों लड़कियाँ क्या करती हैं?
इमे बालिके मार्जनीभ्यां परिष्कुरुतः।	ये दोनों लड़कियाँ झाड़ुओं से साफ (सफाई) करती हैं।
इमे वृद्धे बहुभोजी स्तः।	ये दोनों बुढ़ियाँ अधिक खाने वाली हैं
बहुभोजनेन ते लम्बोदरे।	अधिक खाने से वे लम्बोदर (मोटे पेट वाली) हैं।
बहुभोजनः उदरे विकरोति।	अधिक खाना पेट में विकार करता है।
इमे कृष्णा-लता च।	ये दोनों कृष्णा और लता हैं।
कृष्णा-लते च स्वच्छं कुरुतः।	कृष्णा और लता सफाई करती हैं।
ते कक्षात् रजकणान् निराकुरुतः।	वे दोनों कमरे से धूल दूर करती हैं।
तौ सख्या	वे दोनों सखियाँ हैं।
अयं वृद्धः नेत्रहीनः अस्ति।	यह बूढ़ा नेत्रहीन है।
सख्यौ नेत्रहीनं प्रति उपकुरुतः।	(दो) सखियाँ नेत्रहीन के प्रति उपकार करती हैं।
इमौ सर्पौ।	ये दोनों साँप हैं।
इमौ सर्पौ किं कुरुतः?	ये दोनों साँप क्या करते हैं?
इमौ सर्पौ फुत्कुरुतः।	ये दोनों साँप फुँकारते हैं।

अभ्यास

2. (क) भवसि। (ख) भवावः।
   (ग) भवन्ति (घ) भवामि।
   (ङ) भवथ। (च) भवतः
   (छ) भवति। (ज) भवथः।
3. (क) तौ (ख) ते
   तौ ते
   तौ ते
   (ग) किं ; त्वं (घ) किं ; युवां
   त्वं युवां
   अहं आवाम्
   अहं आवां
4. (क) अहं मयूरः अस्मि। (ख) आवां बालिके स्वः
   (ग) सः वानरः कूर्दति। (घ) ते वानराः कूर्दन्ति।
   (ङ) ते वदन्ति। (च) यूयं कदा खेलथ।
5. **एकवचन** **बहुवचन**
   (क) सा लिखति। ताः लिखन्ति।
   (ख) सः पठति। ते पठन्ति।
   (ग) कृष्णः वदति। कृष्णाः वदन्ति।
   (घ) त्वं गच्छसि। यूयं गच्छथ।
   (ङ) अहं आगच्छामि। वयं आगच्छामः।
   (च) त्वं वदसि। यूयं वदथ।

सातवाँ पाठ :
लड़के और लड़कियाँ

संकेत : विवेकः शेखरः ----------प्रशान्तेपि।

अर्थ–विवेक, शेखर, उर्मित और प्रशान्त चार भाई हैं। विवेक के दो मित्र, निकित और रमेश हैं। वे दोनों विवेक के साथ पढ़ते हैं। शेखर की मित्र संख्या पाँच है।

उर्मित के मित्र तीन है, प्रशान्त के भी।

संकेत : निकिता विवेकादि ----------च गच्छति।

अर्थ–निकिता विवेकादि भाइयों में एक बहिन है। वह तीसरी कक्षा में पढ़ती है। निकिता की सात सखियाँ हैं। वह उनके साथ खेलती है, पढ़ती है और विद्यालय जाती है।

संकेत : सर्वे बालकाः ----------दिनचर्या अस्ति।

अर्थ–सभी लड़के समान भाव से खेलते हैं। वे आठ गायों का दूध पीते हैं वे नौ बजे चारपाइयों पर बैठते और सोते हैं। प्रातः छह बजे वे उठते हैं। यह बालकों की दिनचर्या है।

अभ्यास

2. (क) द्वे मित्रे। (ख) निकिता
   (ग) सप्त सखाः (घ) सर्वे बालकाः
   (ङ) सर्वे बालकाः
3. (क) विवेकः, शेखरः, उर्मितः, प्रशान्तः च चात्वारः भ्रातरः सन्ति।
   (ख) उर्मितस्य मित्राः त्रय सन्ति।
   (ग) विवेकः, शेखरः, उर्मितः, प्रशान्तः।
   (घ) बालकाः नववादने शैयासु तिष्ठन्ति स्वपन्ति च।
   (ङ) सर्वे बालकाः अष्टानां धेनूनां दुग्धं पिबन्ति।
4. (क) इदानीं नववादन समयः अस्ति।
   (ख) मम चत्वारः भ्रातरः सन्ति।
   (ग) रामस्य त्रय भ्रातरः सन्ति।
   (घ) हस्ते पञ्च-अंगुल्यः न सन्ति।
   (ङ) घटिकायां त्रीणि सूचिकादण्डाः सन्ति।
5. (क) उर्मित के मित्र तीन हैं, प्रशान्त के भी।
   (ख) वह तीसरी कक्षा में पढ़ती है।
   (ग) वह उसके साथ खेलती है।
   (घ) वे सब आठ गायों का दूध पीते हैं।
   (ङ) यह लड़कों की दिनचर्या है।

6. (क) मम चत्वार: भ्रातर: सन्ति।
(ख) अहं पञ्चमी कक्षायां पठामि।
(ग) इमा: पुस्तिका: तृतीया: सन्ति।
(घ) अयं तृतीय: भ्रातृ अस्ति।
(ङ) अयं चतुर्थ: पाठ: अस्ति।

आठवाँ पाठ :
यह कौन/क्या है?

अयं क:?	यह कौन है?
अयं बालक:।	यह बालक है।
अयं बालक: किं करोति?	यह बालक क्या करता है?
अयं बालक: नमति।	यह बालक नमस्कार करता है।
अयं क:?	यह कौन है?
अयं चित्रकार:।	यह चित्रकार है।
अयं चित्रकार: किं करोति?	यह चित्रकार क्या करता है?
अयं चित्रकार: चित्रसज्जां करोति।	यह चित्रकार चित्र सजाता है।
इमौ कौ?	ये दोनों कौन हैं?
इमौ बालकौ।	ये दोनों बालक हैं।
इमौ बालकौ किं कुरुत:?	ये दोनों बालक क्या करते हैं?
इमौ बालकौ पठत:।	ये दोनों बालक पढ़ते हैं।
इमौ कौ?	ये दोनों कौन हैं?
इमौ शशकौ।	ये दोनों खरगोश हैं।
इमौ शशकौ किं कुरुत:?	ये दोनों खरगोश क्या करते हैं?
इमौ शशकौ खादत:।	ये दोनों खरगोश खाते हैं।
इमौ कौ?	ये दोनों कौन हैं?
इमौ वृषभौ।	ये दोनों बैल हैं।
इमौ वृषभौ किं कुरुत?	ये दोनों बैल क्या करते हैं?
इमौ वृषभौ शकटं: कर्षत:।	ये दोनों बैल गाड़ी खींचते हैं।

इमे के धावन्ति?	ये कौन दौड़ते हैं?
इमे घोटकाः धावन्ति।	ये घोड़े दौड़ते हैं।
घोटकाः तीव्रं धावन्ति।	घोड़े तेज दौड़ते हैं।
इमे के कूर्दन्ति?	ये कौन कूदते हैं?
इमे मर्कटा कूर्दन्ति।	ये बंदर कूदते हैं।
ते मर्कटाः कूर्दन्ति।	वे बंदर कूदते हैं।
इयं बिडाला किं करोति?	यह बिल्ली क्या करती है?
इयं बिडाला दुग्धं पिबति।	यह बिल्ली दूध पीती है।
दुग्धं मधुरम् अस्ति।	दूध मीठा है।
इयं का?	यह कौन है?
इयं दुर्गा।	यह दुर्गा है।
इयं दुर्गा किं करोति?	यह दुर्गा क्या करती है?
इयं दुर्गा संहरति।	यह दुर्गा संहार करती है।
इमे के?	यह दोनों कौन हैं?
इमे कन्ये।	यह दोनों कन्याएँ हैं।
इमे कन्ये किं कुरुतः?	ये (दो) कन्याएँ क्या करती हैं?
इमे कन्ये पश्यतः।	ये (दो) कन्याएँ देखती हैं।
इमे के?	ये दोनों कौन हैं?
इमे चटके।	ये दोनों चिड़ियाँ हैं।
इमे चटके किं कुरुथ?	ये दोनों चिड़ियाँ क्या करती हैं?
इमे चटके रुवतः	ये दोनों चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
इमाः काः?	ये क्या हैं?
इमाः नौकाः।	ये नौकाएँ हैं।
इमाः नौकाः तरन्ति।	ये नौकाएँ तैरती हैं।
इमाः मूषिकाः।	ये चुहियाँ हैं।
इमाः मूषिकाः किं कुर्वन्ति?	ये चुहियाँ क्या करती हैं?
इमाः मूषिकाः धावन्ति।	ये चुहियाँ दौड़ती हैं।
इमा मक्षिकाः।	ये मक्खियाँ हैं।

इमाः मक्षिकाः किं कुर्वन्ति?	ये मक्खियाँ क्या करती हैं?
इमाः मक्षिकाः उत्पतन्ति।	ये मक्खियाँ उड़ती हैं।

अभ्यास

2. (क) पठतः (ख) चित्रकारः
   (ग) शशकौ (घ) संहरति
   (ङ) रुवतः (च) मूषिकाः
3. (क) काः (ख) कौ
   (ग) कः (घ) के
   (ङ) का
4. **(अ) द्विवचन** **बहुवचन**
   (क) बालकौ नमतः। बालकाः नमन्ति।
   (ख) वनचरौ धावतः। वनचराः धावन्ति।
   (ग) वानरौ कूर्दतः। वानराः कूर्दन्ति।
   (घ) पिकौ कूजतः। पिकाः कूजन्ति।
   (ङ) शुकौ वदतः। शुकाः वदन्ति।
   (आ) द्विवचन वाक्य **बहुवचन वाक्य**
   (क) कृष्णे हसतः। कृष्णाः हसन्ति।
   (ख) बालिके रुदतः। बालिकाः रुदन्ति।
   (ग) अजे धावतः। अजाः धावन्ति।
   (घ) गायिके गायतः। गायिकाः गायन्ति।
   (ङ) प्राचार्ये पाठयतः। प्राचार्याः पाठयन्ति।
5. (क) यदि ; तर्हि
   (ख) यदि ; तर्हि
   (ग) यदि ; तर्हि
   (घ) यदि ; तर्हि
   (ङ) यदि ; तर्हि

नौवाँ पाठ :
यह क्या है?

एतत् फलम्।	यह फल है।
आताफलम् मधुरम् अस्ति।	सेब मीठा है।
एते फले।	ये (दो) फल हैं।
पक्वे आताफले मधुरे स्तः।	(दो) पके सेब मीठे हैं।
एतानि फलानि।	ये फल हैं।
आताफलानि मधुराणि सन्ति।	सेब मीठे हैं।
एतत् पुष्पम्।	यह फूल है।
एतत् पीतं पुष्पं विकसति।	यह पीला फूल खिलता है।
एते पुष्पे।	यह (दो) फूल हैं।
रक्ते पुष्पे विकसतः।	(दो) लाल फूल खिलते हैं।
एतानि पुष्पाणि।	ये फूल हैं।
चित्र-विचित्राणि पुष्पाणि विकसन्ति।	रंग-बिरंगे फूल खिलते हैं।
एतत् पत्रम्।	यह पत्ता है।
पत्रं हरितम् अस्ति।	पत्ता हरा है।
एते पत्रे।	यह (दो) पत्ते हैं।
एते हरिते पत्रे स्तः।	ये (दो) हरे पत्ते हैं।
एतानि पत्राणि।	ये पत्ते हैं।
शुष्कानि पत्राणि सन्ति।	सूखे पत्ते हैं।
एतत् स्यूतम्।	यह बैग है।
एतत् वृहदाकारं स्यूतम् अस्ति।	यह बड़े आकार का बैग है।
एते स्यूते।	ये दो बैग हैं।
एते स्यूते कृष्णनील वर्णे स्तः।	ये (दो) काले-नीले रंग के बैग हैं।
एतानि स्यूतानि।	ये बैग हैं।
एतानि स्यूतानि बहु-आकाराणि सन्ति।	ये बैग अनेक आकार के हैं।
तानि चित्र-विचित्राणि सन्ति।	ये रंग-बिरंगे बैग हैं।

इस चित्र को देखो–

इस चित्र में एक खिलौना, दो डिब्बे, तीन खिड़कियाँ, चार किताबें, पाँच तलवारें, छह त्रिशूल, सात बैग हैं। इसके अतिरिक्त सात गेंदें (और) आठ मिठाइयाँ शोभा देती हैं। और नौ फल हैं।

अभ्यास

		एकवचन वाक्य	द्विवचन वाक्य	बहुवचन वाक्य
2.	**(अ)**	**एकवचन वाक्य**	**द्विवचन वाक्य**	**बहुवचन वाक्य**
	(क)	फलम्	एते	एतानि
	(ख)	एतत्	मन्दिरे	एतानि मन्दिराणि
	(ग)	एतत् दीपकम्।		एतानि
	(घ)	एतत्	एते भोजने।	एतानि

3. (क) यत्र ; तत्र (ख) यत्र ; तत्र (ग) यत्र ; तत्र
(घ) यत्र ; तत्र (ङ) यत्र ; तत्र

4. (क) के (ख) किम्
(ग) एतानि कानि? (घ) के

दसवाँ पाठ :
मेरी पाठशाला

संकेत : इयं मम ------------------------------------भवति।

अर्थ–यह मेरी पाठशाला है। मैं यहाँ पढ़ता/पढ़ती हूँ। पाठशाला ज्ञान की स्थली होती है।

संकेत : अयं प्राचार्यकक्षः ---------------------------इच्छति।

अर्थ–यह प्रधानाचार्य कक्ष है। प्रधानाचार्य विद्यालय का संचालन करते हैं। प्रधानाचार्य अनुशासन की इच्छा करते हैं।

संकेत : प्राचार्यकक्षं ---------------------------------कुर्वन्ति।

अर्थ–प्रधानाचार्य कक्ष के पास अध्यापक कक्ष है। खाली समय में अध्यापक यहाँ चिंतन और अध्ययन करते हैं।

संकेत : विविधैः पुस्तकै -------------------------न भवति।

अर्थ–विभिन्न पुस्तकों से सुसज्जित यह पुस्तकालय है। यहाँ छात्र अध्ययन करते हैं। ज्ञान के बिना मुक्ति नहीं होती है।

संकेत : पुस्तकालयात् पुस्तकम् ----------अधितिष्ठन्ति।

अर्थ–पुस्तकालय से पुस्तक लेकर छात्र यहाँ बैठते और पढ़ते हैं। वे पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ते हैं। छात्र आसन पर बैठते हैं।

संकेत : शारदा ----------कुर्वन्ति।

अर्थ–सरस्वती ज्ञान देती है। हम सरस्वती को नमस्कार करते हैं। यहाँ छात्र सरस्वती का ध्यान करते हैं। वे प्रार्थना करते हैं।

संकेत : अत्र ----------वृक्षाः सन्ति।

अर्थ–यहाँ विद्यालय का बगीचा है। छात्र खाली समय में यहाँ बैठते हैं। बगीचे के चारों ओर पेड़ हैं।

संकेत : इयं मम ----------संस्कृतं पाठयति।

अर्थ–यह मेरी कक्षा है। मैं संस्कृत पढ़ता/पढ़ती हूँ। अध्यापक छात्रों को पढ़ाता है।

यह मेरे कक्षाध्यापक हैं। ये श्री उमाशंकर सुशील अध्यापक हैं। वह हमें संस्कृत पढाते हैं।

संकेत : अहं पाठशालां ----------गच्छन्ति।

अर्थ–मैं पाठशाला से स्नेह करता/करती हूँ। विद्यालय के चारों ओर अनेक सड़कें हैं। छात्र सड़क से पाठशाला जाते हैं।

अभ्यास

2. (क) त्वं गृहाणि पश्यसि। (ख) भिक्षुकः वनानि उपवसति।
   (ग) त्वं विद्यालयाणि गच्छसि। (घ) वयं पुस्तकानि पठामः।
   (ङ) प्रधानाचार्यः आसनानि अधितिष्ठति।
   (च) सः पुष्पाणि आनयति।
3. (क) ज्ञानस्थली (ख) विद्यालय संचालनं
   (ग) चिन्तनम् अध्ययनं च (घ) इयं पुस्तककक्षा
   (ङ) श्री उमाशंकरः
4. (क) कानि (ख) कं
   (ग) कानि (घ) कं
   (ङ) कान्

ग्यारहवाँ पाठ :
प्रदान करना/देना

कृष्णाय नवनीतं रोचते।	कृष्ण को मक्खन अच्छा लगता है।
कृष्णाय वेणुवादनं रोचते।	कृष्ण को बाँसुरी बजाना अच्छा लगता है।
गोपालेभ्यः धेनुचारणं रोचते।	ग्वालों को गाय चराना अच्छा लगता है।
कृष्णाय नमः। गोपालाय नमः।	कृष्ण को नमस्कार है। गोपाल को नमस्कार है।
नृपः विप्राय धेनुं ददाति।	राजा ब्राह्मण को गाय देता है।
विप्रः नृपाय आशीर्वचनं ददाति।	ब्राह्मण राजा को आशीर्वचन देता है।
सः विप्राय दानं प्रयच्छति।	वह ब्राह्मण को दान देता है।
विप्रः तस्मै ज्ञानं प्रयच्छति।	ब्राह्मण उसको ज्ञान प्रदान करता है।
रामः मूर्खाय क्रुध्यति।	राम मूर्ख पर क्रोध करता है।
गौतमः शारदायै कुप्यति।	गौतम शारदा पर कोप करता है।
ते गौतमाय कुप्यतः।	वे दोनों गौतम पर क्रोध करती हैं।
ते गोकर्णाय क्रुध्यन्ति।	वे गोकर्ण पर क्रोध करते हैं।
विद्या ज्ञानाय भवति। धनं मदाय, जीवनः	विद्या ज्ञान के लिए होती है। धन मद के लिए,
रक्षणाय, दानाय च भवति। शक्ति परेषां	जीवन रक्षा के लिए और दान के लिए होता है।
रक्षणाय भवति। सा संत्रासणाय न भवति।	शक्ति दूसरों की रक्षा के लिए होती है। वह दुःख देने के लिए नहीं होती है।
रावणः रामाय क्रुध्यति।	राम पर रावण क्रोध करता है।
रावणः रामाय द्रुह्यति।	रावण राम पर द्रोह करता है।
सः रामाय ईष्यति।	वह राम से ईर्ष्या करता है।
रावणः तस्मै असूयति।	रावण उसके लिए।
श्री गणेशाय नमः।	श्री गणेश को नमस्कार है।
यजमानाय स्वस्ति।	यजमान को स्वस्ति हो।
अग्नेय स्वाहा।	अग्नि को समर्पण है।

पितृभ्यः स्वधा।	पितरों को अर्पित है।
हरिः भक्ताय मोक्षं धारयति।	हरि भक्त के लिए मोक्ष पोषण करता है।
सुरेशः कृष्णाय शतं धारयति।	सुरेश कृष्ण के लिए सौ पोषण करता है।
सः मह्यं शतं धारयति।	वह मुझे सौ पोषण करता है।
सा तुभ्यं सहस्रं धारयति।	वह तुमसे हजार को पोषण करता है।
चक्रधराय नमः।	चक्रधर को नमस्कार है।
रमायै नमः।	रमा को नमस्कार है।
रामाय नमः।	राम को नमस्कार है।
पितृभ्यां नमः।	(दो) पितरों को नमस्कार है।

अभ्यास

2. (क) नमः (ख) रोचते
   (ग) ददाति (घ) कुप्यति
   (ङ) रोचते।
3. (क) पुत्राय पुत्रेभ्यः
   छात्राभ्याम् छात्रेभ्यः
   निर्धनाय
   (ख) दुग्धेभ्यः
   फलाभ्याम् फलेभ्यः
   मित्राय मित्रेभ्यः
   (ग) अम्बाभ्याम् अम्बाभ्यः
   शिक्षिकाभ्याम्
   तारिकायै तारिकाभ्यः
   सुतायै सुताभ्यः
4. (क) किमर्थम् (ख) कस्मै
   (ग) केभ्य (घ) काभ्याम्

बारहवाँ पाठ :
हाथी और कछुआ

संकेत–वनात् ----------इच्छामि।

अर्थ–(एक हाथी जंगल से निकलता है। वह एक तालाब की ओर जाता है वहाँ एक कछुआ रहता है। वह पानी से हाथी के पास आता है। दोनों मिलते हैं।)

कछुआ – तुम कौन हो और कहाँ से आ रहे हो?

हाथी – मैं जंगल से आ रहा हूँ। तालाब से पानी पीकर मैं जाना चाहता हूँ।

संकेत–किंतु अत्र ---------- पतन्ति च।

अर्थ– कछुआ–किंतु मैं यहाँ तैरता हूँ। यह छोटा तालाब है। मैं तालाब से जल नहीं देता हूँ।

हाथी–मित्र! तालाब का पानी पीने से कम नहीं होता है।

कछुआ–कैसे?

हाथी–ईश्वर की कृपा से, हिमालय से जब पानी आता है, तब नदी उत्पन्न होती है। नदी एक स्थान से दूसरे स्थान को बहती है। अनेक नदियाँ पृथ्वी से समुद्र की ओर जाती हैं और वे समुद्र में गिरती हैं।

संकेत–तदस्तु ----------गृहाण।

अर्थ–कछुआ–तब तो, यदि हिमालय से अथवा धरती से पानी समुद्र में गिरता है, तब आने वाले समय में मैं कहाँ ...?

हाथी–डरो मत। यह जल समुद्र से सूर्य की गर्मी के द्वारा आकाश की ओर जाता है। वहाँ वह बादल बनता है। आकाश से बादल बरसते हैं। पानी पुनः आकाश से आता है। आकाश से जब वर्षा होती है। तालाब नदियाँ और दूसरे जल के साधन पानी से भर जाते हैं।

कछुआ – तब ठीक है मित्र! जल पी लो। इस जल को इच्छानुसार ग्रहण करो।

संकेत– गजः ----------आप्नोति।

अर्थ–हाथी तालाब से जल पीता है। तालाब से जल पीकर जल से स्नान करता है। कछुआ प्रसन्न होता है। तालाब से बाहर आकर कछुआ हाथी के लिए उपहार के रूप में जल के नीचे से मोती लाकर देता है। वह हाथी से शिक्षा प्राप्त करता है।

अभ्यास

2. (क) भिक्षार्थं, गच्छति (ख) बालकाय; पोलिकां
   (ग) बालकः (घ) महिला बालकाय
   (ङ) विषाक्तां पोलिकां खादित्वा प्राणान्

3. (क) निर्धनाय निर्धनेभ्य
   देवाभ्याम्
   (ख) क्षुधाभ्याम्
   रोटिकायै रोटिकाभ्यः
   (ग) पूजनाय पूजनेभ्यः
   फलाभ्याम्

4. (क) कृष्णाय (ख) इन्द्राय
   (ग) गोविन्दाय (घ) रामाय
   (ङ) कुबेराय।

5. (क) पादेभ्यः (ख) पुण्याय
   (ग) ब्राह्मणाय (घ) भ्रमणाय
   (ङ) पठनाय

6. (क) वितरति (ख) ददाति
   (ग) गच्छति (घ) भवति
   (ङ) फलन्ति

द्वितीया

पहला पाठ :
काव्यों शास्त्रों में कवि

संकेत : कविषु कालिदासः ---------- श्रेष्ठ अस्ति।

अर्थ–कवियों में कालिदास श्रेष्ठ है। इसके नाटकों में शकुन्तला नाटक रमणीय है। शकुन्तला नाटक के अंकों में चतुर्थांक (चौथा अंक) श्रेष्ठ है। खण्डकाव्यों में मेघदूत काव्य श्रेष्ठ है।

संकेतः महाकाव्येषु ---------- ग्रामे अभवत्।

अर्थ–महाकाव्यों में सूरसागर महाकाव्य श्रेष्ठ है। रसों में वात्सल्य रस श्रेष्ठ है। वात्सल्य रस के पिता सूरदास है। सूरदास वृन्दावन में रहते थे। सूरदास का जन्म मथुरा के समीप रुनकता गाँव में हुआ।

संकेत : महादेव्या ---------- कवयित्री आसीत्।

अर्थ–महादेवी का जन्म फर्रुखाबाद नगर में हुआ। ये एम०ए० की कक्षा में संस्कृत विषय में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुईं। दर्शन में, संगीत शास्त्र में, चित्रकला में इनकी महती अभिरुचि थी। ये छायावाद रहस्यवाद के कवियों में प्रमुख कवयित्री थीं।

अभ्यास

1. (क) कविषु कालिदासः श्रेष्ठः अस्ति।
   (ख) शकुन्तला नाटके अंकेषु चतुर्थोऽकः श्रेष्ठ अस्ति।
   (ग) महाकाव्येषु सूरसागरः महाकाव्यः श्रेष्ठः अस्ति।
   (घ) सूरदासः वात्सल्य-रसस्य जनकः अस्ति।
   (ङ) छायावादेषु कविषु महादेवी प्रमुख कवयित्री आसीत्।
2. (क) अयं ; किशोरः
   (ख) मथुरा नगरे ; कारागृहे
   (ग) अभिनये ; प्रयाग
   (घ) स्वयं करें।
3. (क) गिरिराजः सप्तवादने उत्तिष्ठति।
   (ख) नायकेषु अमिताभः श्रेष्ठः अस्ति।
   (ग) तस्य जन्म उत्तरप्रदेशे अभवत्।

(घ) गृहस्य समीपे उद्यानम् अस्ति।

(ङ) सः गोकुल नगरे वसति।

4. (क) काव्येषु कः काव्यः श्रेष्ठः अस्ति।

(ख) शास्त्रेषु ज्योतिर्विज्ञानः श्रेष्ठः अस्ति।

(ग) दीपके तैलम् अस्ति।

(घ) रामयोः इयं विथिका अस्ति।

(ङ) बालकयोः मध्ये विवादः अभवत्।

दूसरा पाठ :
बंदर की दुष्टता

संकेत : वैलूरपुरग्रामे ----------पुष्टम् अभवत्।

अर्थ–वैलूरपुर गाँव में दिवाकर नाम का किसान रहता था। एक समय उसने एक बंदर पाला। कुछ समय के बाद वह बंदर बहुत-सा अन्न खाकर अति तंदुरुस्त हो गया।

संकेत : एकदा कृषीवलः ---------- उपविष्टः अभवत्।

अर्थ–एक बार किसान दिवाकर दध्योदन (दही और चावल का बना खाद्य पदार्थ) लेकर किसी कार्य से बन्दर के साथ दूसरे गाँव की ओर चला। और रास्ते में एक नदी देखकर वहीं दध्योदन खाने के लिए बैठ गया। वह वहाँ किसी वृक्ष की जड़ में दही-चावल रखकर हाथ-मुँह धोने के लिए नदी पर जाकर नदी के किनारे बैठ गया।

संकेत : अत्रान्तरे तेन ----------अजः मृतः।

अर्थ–इधर (इसी समय) उस दुष्ट बंदर ने वह सभी दध्योदन खा लिया। पुनः हाथ से कुछ दही लेकर समीप में स्थित बकरे के मुँह पर लगाकर/लपेटकर 'जैसे कुछ नहीं जानता' दूर जाकर बैठ गया। किसान दिवाकर हाथ-मुँह धोकर वृक्ष के जड़ (के पास) में आकर देखता है–'सारा दध्योदन किसी ने निपटा दिया है। समीप में स्थित बकरे के मुख को देखकर–'इसके द्वारा ही सम्पूर्ण अन्न खाया गया है' ऐसा मानकर पीटा। इससे बकरा मर गया।

संकेत : दुष्टजनाः ----------निर्णयं कुर्वन्ति।

अर्थ–दुष्ट लोग अपराध करके 'दूसरे ने यह अपराध किया है' ऐसा दर्शाते हैं। मूर्ख लोग घटना की वास्तविक स्वरूपता को न जानकर संकीर्ण बुद्धि से ही निर्णय करते हैं।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	वृक्षे	
वृक्षम्		
		वृक्षैः
वृक्षाय	वृक्षाभ्याम्	
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		अपराधानि
	अपराधे	
		अपराधै
अपराधाय		

2. (क) वैलूरपुरग्रामे। (ख) वानरेण सह।
   (ग) दुष्ट वानरेण। (घ) हस्तमुखौ प्रक्षालनार्थं
   (ङ) अजमुखे।
3. (क) वानरः प्रभूतम् अन्नं खादित्वा अतिपुष्टम् अभवत्।
   (ख) दिवाकरः हस्तमुखौ प्रक्षालनार्थं नदीस्तीरम् अगच्छत्।
   (ग) वानरः स्वकृतापराधं अजोपरि स्थापितम् अकरोत्।
   (घ) वानरस्य कृत दुष्कृत्येन अजः मृतः।
4. (क) वानरः ; अन्नम् (ख) नदीम् ; दध्योदनम्
   (ग) दुष्टेन ; भक्षितम् (घ) दिवाकरः ; मूलम्
5. (क) ग्रामं (ख) हस्तमुखौ
   (ग) अजः (घ) अन्येन्
   (ङ) बुद्धे
6. (I) पालयन्ति

	पालयसि	पालयथ
	पालयामि	पालयामः
(II)		अपालयन्
	अपालय	अपालयत्
	अपालयम्	अपालयाम्

(ब) (क) सः एकं वानरं अपालयत्।

(ख) दिवाकरः नदीस्तीरे अतिष्ठत्।

(ग) सः वृक्षस्य मूलं समागत्य अपश्यत्।

(घ) दिवाकरः दण्डेन अदण्डयत्।

(ङ) सा ग्रामं अगच्छत्।

7. (क) एकम् (ख) एकाम्

(ग) अन्य (घ) सर्वं

(ङ) निशेषं

तीसरा पाठ :
सेवा का परिणाम

संकेत : अपराह्ने ---------- स्थापयत्।

अर्थ–दोपहर को विद्यालय से आकर रमा ने देखा कि घर के दरवाजे के पास एक चिड़िया का बच्चा गिर गया है। वह घायल था। रमा उसे उठाकर अपने घर ले गई। रमा ने अपने दोनों हाथों से चिड़िया के बच्चे का एक घोंसला बनाया और पुनः उस घोंसले में बच्चे को बैठा दिया/रख दिया।

संकेत : सा प्रतिदिनं ---------- भूत्वा उत्पतत्।

अर्थ–उसने रोजाना शिशु का पोषण किया। धीरे-धीरे वह बच्चा स्वस्थ हो गया। एक दिन रमा ने अनुभव किया–यह शिशु स्वस्थ होते हुए भी मन से अस्वस्थ है। वह भूख से पीड़ित होगा यह मानकर रमा चिंतित हुई। पुनः रमा ने अनुभव किया अनुमानतः (संभव है) यह बच्चा बंधनयुक्त वातावरण को देखकर अशान्ति का अनुभव करता है। अतः सुबह रमा ने उस घोंसले को उठाकर खिड़की में रख दिया। दूसरे दिन रमा को ज्ञात हुआ कि वह बच्चा स्वस्थ होकर उड़ गया।

संकेत : दिनात् दिनं ---------- मुक्तां ददामि।''

अर्थ–दिन पर दिन व्यतीत हुए। एक दिन सुबह रमा ने खिड़की में अल्प आवाज सुनी। उसने देखा और बोली–''ओह! यह तो वही चिड़िया का बच्चा है।' अब वह बड़ा हो गया है। आज वह चूँ–चूँ बोल रहा/चहचहा रहा था। उसे देख कर रमा मन से प्रसन्न हो गई। उसने रमा को नहीं भुलाया था। उसके मुँह में एक मोती था। वह चोंच फैलाकर मोती को रमा के लिए देकर उड़ गया (और जाते-जाते वह बोला–धन्यवाद रमा! तुम्हारी सेवा के परिणाम में यह मोती दे रहा हूँ।''

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
चटकाया:		
	चटकयो:	चटकानाम्
	चटकयो:	
हे चटके!		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	मुक्ताभ्याम्	
मुक्ताया:		
	मुक्तयो:	
हे मुक्ते!		हे मुक्ता:!

2. (क) बालचटका (ख) स्वस्थम्
   (ग) अपरेस्मिन दिवसे (घ) बालखग:
   (ङ) मुक्तां
3. (क) रमा बालचटकायै नीडम् अरचत्।
   (ख) एकदा रमा अनुभवत्–अयं शिशु स्वस्थीभूतोऽपि मनसा अस्वस्थ: अस्ति।
   (ग) बालचटका विषये रमा अनुभवत् अनुमानत: अयं खगशिशु: बंधनयुत-वातावरणं दृष्ट्वा अशान्तम् अनुभवति।
   (घ) प्रात: गवाक्षे रमा खगशिशुम् अपश्यत् अवदत् च–''ओह! अयं तु सैव बालखग: अस्ति।''

(ङ) चटका रमां प्रति अवदत्–धन्यवादं रमा! तव सेवाफले अहम् इयं मुक्तां ददामि।

4. (क) अपराह्ने विद्यालयात् आगत्य रमा एकां बालचटकाम् अपश्यत्।
(ख) सा रमा आसीत्।
(ग) सा प्रतिदिनं शिशुं पोषयत्।
(घ) चटका रमायै एकां मुक्ताम् अददात्।
(ङ) सा तूष्णीम् अतिष्ठत्।

5. (क) *(ii)* रमा अनुभवति। *(iii)* चटका मुक्तां ददाति।
(iv) सा पश्यति। *(v)* सा बालचटका न उत्पतति।
(ख) *(i)* बालचटकाः *(ii)* रमाभ्यः
(iii) ताः *(iv)* ते

6.

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)		विद्यालयाभ्याम्	विद्यालयेभ्यः
(ख)		घायलौ	घायलाः
(ग)		आगच्छताम्	आगच्छन्
(घ)		गवाक्षयोः	गवाक्षेषु
(ङ)		रमे	रमाः

चौथा पाठ :
पुल टूट गया

संकेत : बीहट ग्रामस्य ----------भवति स्म।

अर्थ–बीहट ग्राम के पास एक नदी बहती थी। उसके ऊपर रेलवे पुल था। उस पर रेलगाड़ी का आवागमन होता था।

संकेत : तस्य धूम्रयानसेतुं ----------आसीत्।

अर्थ–उस रेलवे पुल के पास में एक झोपड़ी में एक बुढ़िया अपनी पौत्री के साथ रहती थी। वह बुढ़िया अति दरिद्रा किंतु समाज सेविका थी।

संकेत : एकदा मेघाच्छन्नः ----------अभवताम्।

अर्थ–एक समय बादलों से घिरी हुई तूफान भरी रात आई। वर्षा के जल से नदी में उफान आ गया। सहसा कानों को फाड़ देने वाला विस्फोट हुआ। बुढ़िया के मन में संदेह उत्पन्न हो गया। उसने देखा–'पुल टूट गया है।' रेलगाड़ी की दोनों पटरियाँ लटक गई हैं।

संकेत : सा वृद्धा ----------भविष्यति।

अर्थ–उस बुढ़िया ने अपनी पौत्री से कहा–''पुत्री! रेलगाड़ी आधा घंटे बाद इधर आएगी। पुल के ऊपर जैसे ही वह आएगी क्षण भर में ही नदी के जल में गिर जाएगी और पानी में डूब जाएगी। इससे बहुत से नागरिकों की मृत्यु हो जाएगी।

संकेत : पौत्री अवदत् ---------- अति आवश्यकम्।''

अर्थ–पौत्री ने कहा –''नानी जी! इस संकट के समय अथवा वेला में भय मत करो। 'सही उपाय करने से सभी सम्भव है।' मैंने पुस्तक में पढ़ा है कि यह रेलगाड़ी लाल रंग के संकेत से रुकती है। मेरे पास एक लाल कपड़ा है। यहाँ रोशनी की व्यवस्था अति आवश्यक है।

संकेत : सा वृद्धा अवदत् ----------अददात्।

अर्थ–वह बुढ़िया बोली – 'घर में सूखी लकड़ियाँ नहीं हैं। अतः कैसे आग जलाऊँ?'' वह बुढ़िया फिर बोली,–''यहाँ मेरी खाट का पाया सूखा है। अतः उसे जला देती हूँ।'' खाट के पाये को जलाकर वे दोनों पुल के ऊपर आकर उस मार्ग पर जाने लगीं जिस मार्ग से रेलगाड़ी आती है। रेलगाड़ी के संचालक (ड्राइवर) ने दोनों को देखा। उसने रेलगाड़ी की चाल को रोक दिया। समस्त घटना को जानकर वह प्रसन्न हुआ। रेलवे विभाग ने दोनों को बहुत-सा पुरस्कार दिया।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
वृद्धा		
	वृद्धे	
वृद्धया		वृद्धाभिः
	वृद्धाभ्याम्	

दरिद्राः

दरिद्रे दरिद्राः

दरिद्राभ्याम्

दरिद्रायै दरिद्राभ्यः

2. (क) बीहटग्रामस्य (ख) एका वृद्धास्य

(ग) वृद्धया (घ) सेतु

(ङ) धूम्रयानम्

3. (क) धूम्रयानस्य आवागमनं सेतवे आसीत्।

(ख) नद्यायां जल प्लावनेन सेतुः भग्नः अभवत्।

(ग) सा अपश्यत् – सेतुः भग्नः अभवत्।

(घ) पौत्री अवदत्–मातामही! अस्मिन् संकटकाले वेलायां वा भयं मा कुरु। (सम्यकोपायेन सर्वं संभव भवति। अं पुस्तके अपठम् पत् इयं लौहपाथगामिनी रक्तवर्णसंकेतेन तिर्षति। मम समीपे एकं रक्तवस्त्रम् अस्ति। अत्र प्रकाश व्यवस्था अति आवश्यकम!।)

(ङ) मातामही पौत्री द्वयोः सम्यक् कार्येण दुर्घटना न अभवत्।

4. (क) समीपे ; वृद्धा ; न्यवसत् ; समाज–सेविका।

(ख) खट्वापादं ; आगच्छताम् ; लौहपथगामिनी।

5. (क) सा वृद्धा अवदत्।

(ख) सा वृद्धाः अति दरिद्रा किन्तु समाज सेविका आसीत्।

(ग) अनेन बहवः नागरिकानां प्राणनाशं भविष्यति।

(घ) सा वृद्धा पुनः अवदत्।

(ङ) समस्त घटनां ज्ञात्वा सः प्रसन्नः अभवत्।

6. (अ) (क) ग्रामस्य समीपे नदी वहतु।

(ख) सेतवे धूम्रयानानां आवागमनं भवतु।

(ग) सा पश्यतु।

(घ) सः वदतु।

(ब) (क) नद्याः अवहन्।

(ख) ताः वृद्ध अति दरिद्राः आसन्।

(ग) सेतवः भग्नाः अभवन्।

(घ) वयं पुस्तकेषु अपठाम।

(ङ) सर्वकारैः तां पुरस्कारं अददात्।

7.	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)			वर्षाभ्यः
(ख)		सेतू	सेतवः
(ग)		वेले	वेलाः
(घ)		रमाभ्याम्	रमाभिः
(ङ)		संचालिके	संचालिका
(च)	उभया		

पाँचवाँ पाठ :
मित्रता

संकेत : महर्षि सान्दीपनि-आश्रमे .....मैत्री आसीत्।

अर्थ–महर्षि सान्दीपनि के आश्रम में अनेक शिष्य पढ़ते थे। उन शिष्यों में श्रीदामा–कृष्ण नाम के दो मित्र थे। उनमें श्रीदामा निर्धन परिवार का बालक था। किंतु कृष्ण धनी वसुदेव अथवा यशोदा का पुत्र था। श्रीदामा और कृष्ण में गहरी मित्रता थी।

संकेत : पूर्ण शिक्षां ----------जीविका आसीत्।

अर्थ–शिक्षा पूरी करके वे दोनों अपने–अपने घर लौटे। तब भी उनकी मित्रता अथवा प्रीति कम नहीं हुई। युवावस्था आने पर कृष्ण द्वारिका के राजा हुए किंतु श्रीदामा निर्धन ब्राह्मण ही रहे। वे भिक्षा के लिए दर–दर घूमते थे और भिक्षा माँगते थे। भिक्षा ही उसकी आजीविका थी।

संकेत : एकदा श्रीदामा ----------सर्ववृत्तान्तम् अकथयत्।

अर्थ–एक बार श्रीदामा ने पत्नी को बताया–'हे प्रिये! द्वारिका का राजा कृष्ण मेरा सहपाठी और मित्र है।'

उस वचन को सुनकर वह बोली–''स्वामी! धन के अभाव में मैं दु:खी हूँ। श्रीकृष्ण धनी और दीनबंधु हैं। द्वारिका जाओ। धन लाओ।'' उसने इस तरह बार-बार प्रार्थना की। पत्नी का निवेदन जानकर श्रीदामा द्वारिकापुरी गया। राजद्वार पर द्वारपाल ने रोका। श्रीदामा ने द्वारपाल को अपना परिचय दिया। उसका परिचय जानकर वह आश्चर्यचकित हुआ कि 'यह फटे-पुराने कपड़े पहनने वाला ब्राह्मण द्वारिकाधीश का मित्र होगा। अत: वह विस्मय से श्रीकृष्ण के पास उपस्थित हुआ। द्वारपाल ने श्रीकृष्ण को समस्त सूचना कही।

संकेत : 'श्रीदामा' इति ----------समपर्यत्।

अर्थ–'श्रीदामा' यह नाम सुनकर द्वारिकाधीश नंगे पैरों से शीघ्रतापूर्वक राजद्वार पर उपस्थित हुए और हाथों को फैलाकर श्रीदामा का आलिंगन किया।

मित्र की दशा देखकर श्रीकृष्ण ने अपने मित्र के लिए राजसम्मान, वस्त्र आदि दिए। मित्र के समस्त मनोरथ जानकर मनोनुरूप यथाइच्छित द्रव्य प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में समर्पित किया।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	धनिकौ	
	धनिकौ	
धनिकेन		धनिकै
धनिकाय	धनिकाभ्याम्	
द्वारिकाधीश:		द्वारिकाधीशा:
	द्वारिकाधीशौ	द्वारिकाधीशान्
द्वारिकाधीशेन	द्वारिकाधीशाभ्याम्	
द्वारिकाधीशाय		द्वारिकाधीशेभ्य:

2. (क) सन्दीपनि आश्रमे। (ख) श्रीदामा सह
   (ग) द्वारिकाया: नरेश:। (घ) श्रीदामास्य।
   (ङ) द्वारपाल:।
3. (क) श्रीदामा निर्धनकुटुम्ब: कृष्णस्य च धनिक कुटुम्बस्य बालौ आस्ताम्।

(ख) युवावस्थां प्राप्य श्रीदामा द्वारे-द्वारे भिक्षाटनं करोति स्म।

(ग) ''स्वामी! धनाभावे अहं दु:खिता अस्मि। द्वारिकां गच्छ। धनम् आनय।''

(घ) भार्याया: निवेदनं विज्ञाय श्रीदामा द्वारिकापुरीम् अगच्छत्।

(ङ) 'श्रीदामा' इति नाम ज्ञात्वा कृष्ण: नग्नपादाभ्यां झटिति राजद्वारम् उपस्थित: अभवत् श्रीदामालिंगनं च अकरोत्।

4. (क) श्रीदामा ; द्वारिकाधीश: ; सखा ; सा

(ख) दशां ; स्वमित्राय ; सर्वमनोज्ञं ; यथोप्लसितं ; प्रत्यक्षेण, रूपेण।

5. (क) तेषु शिष्येषु श्रीदामा-कृष्णौ नाम द्वे मित्रौ आस्ताम्।

(ख) श्रीदामा निर्धन विप्र: अभवत्।

(ग) भिक्षा: एव तस्या जीविका आसीत्।

(घ) द्वारिकां गच्छ। धनम् आनय।

(ङ) द्वारपाल: श्रीकृष्णं सर्ववृत्तान्तम् अकथयत्।

6. (अ) (क) स: भिक्षाम् याचतु।

(ख) स: भिक्षायै द्वारात्-द्वारे भ्रमतु।

(ग) द्वारपाल: श्रीदामाम् अवरोधयतु।

(घ) श्रीकृष्ण हस्तौ प्रसार्य श्रीदामालिंगनम् करोतु।

(ब) (क) आश्रमे शिष्या: अपठन्।

(ख) ते निर्धना: अभवन्।

(ग) तान् वचनान् श्रुत्वा ते अवदन्।

(घ) द्वारिकां गच्छत।

(ङ) द्वारपाला: सर्ववृत्तान्तम् अकथयन्।

7.

	विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(क)	चतुर्थी		द्वारपालाभ्याम्	
(ख)	प्रथमा		कृष्णौ	कृष्णा:
(ग)	प्रथमा		द्वारपालौ	
(घ)	तृतीया			कृष्णेभ्य:

(ङ)	द्वितीया		द्वारपालौ	द्वारपालान
(च)	चतुर्थी	कृष्णाय		कृष्णेभ्यः

छठा पाठ :

बातचीत

(प्रथम दृश्य)

नवीन – मातंगी! नमस्ते!

मातंगी – सुबह की नमस्ते, नवीन!

नवीन – तुम कहाँ जा रही हो?

मातंगी – मैं विद्यालय जा रही हूँ। आज हमारे विद्यालय में वार्षिकोत्सव है। तुम कहाँ जा रहे हो।

नवीन – मैं इस समय बाजार जा रहा हूँ। आज हमारे घर कुछ आगन्तुक आएँगे। उनके अतिथि सत्कार के लिए फल और मिष्ठान्न लाऊँगा।

मातंगी – अतिथि सेवा ही देव सेवा होती है। हमारे अध्यापक भी ऐसा ही कहते हैं कि जो लोग माता-पिता, गुरुओं अथवा वृद्धों की सेवा करते हैं वे अवश्य ही सफल होते हैं।

नवीन – तब तो मन, वचन (और) कर्म से सेवा करनी चाहिए।

मातंगी – मैं भी (इस) सत्य वाक्य को स्वीकार करूँगी। तुम कब पाठशाला जाओगे?

नवीन – मातंगी! मैं तो तीन दिन बाद विद्यालय जाऊँगा।

मातंगी – तुम यहाँ तीन दिन तक क्या करोगे?

नवीन – मातंगी! मैं विद्यालय का गृहकार्य पूर्ण करूँगा। तुम घर से कब चलती हो?

मातंगी – मैं घर से साढ़े छह बजे चलती हूँ।

नवीन – मातंगी! इस समय विलम्ब हो रहा है। अतः शीघ्र ही बाजार से खरीदी वस्तुओं को लेकर घर जाऊँगा। मैं चलता हूँ।

(नवीन जाता है। मातंगी भी जाती है)

(द्वितीय दृश्य)

नवीन – महोदय! आइए। आइए महोदय!

आगन्तुक– ठीक है तुम्हारा कल्याण (भला) हो। तुम्हारे पिताजी कहाँ हैं?

नवीन – महोदय! सोफा पर बैठिए। मेरे पिता शीघ्र आएँगे। जल पीजिए। (आगन्तुक पानी पीता है)

नवीन – मेरे पिता आ गए। पिताजी! ये महोदय आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। (आगंतुक से) यह मेरे पिताजी हैं। मैं जाता हूँ पढ़ाई करूँगा। (नवीन जाता है)।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	सेवाभ्याम्	
	सेवाभ्याम्	सेवानाम्
सेवायाम्		सेवासु
हे सेवा!	हे सेवे!	
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कक्षायाः	कक्षाभ्याम्	कक्षाभ्यः
कक्षायाः	कक्षाभ्याम्	
कक्षायाम्		कक्षासु
हे कक्षा!	हे कक्षे!	

2. (क) पाठशालां (ख) आपणं
   (ग) नवीनस्य (घ) त्रि
   (ङ) जलं

3. (क) अहम् इदानीम् आपणं गच्छामि।
   (ख) मातंगी, अतिथि-सेवा देवसेवा मन्यते।
   (ग) त्रीणि दिवसानि यावत् नवीनः गृहकार्यं सम्पादयति।
   (घ) आगम्यताम् महोदय! आगम्यताम्।

(ङ) अहं गच्छामि अध्ययनं करिष्यामि।

4. (क) त्वं कुत्र गच्छसि?

(ख) त्वं कदा पाठशालां गच्छसि?

(ग) अतिथि सेवा एव देव सेवा भवति।

(घ) अहं पाठशालायाः गृहकार्यं संपादयिष्यामि।

5. (अ) (क) पाठशालां (ख) अवधारयिष्यामि

(ग) गृहात् (घ) पिब

(ङ) पीठासने

(ब) (क) (यूयं) चिरं जीवत! (ख) (यूयं) शीघ्रं गच्छत।

(ग) (यूयं) गृहं गच्छत। (घ) (यूयं) ईश्वरं भजत।

(ङ) (यूयं) प्रार्थना कुरुत।

6. (अ) (क) रामेण (ख) अध्ययनेन

(ग) विद्यया (घ) अतिथि सेवया

(ब) (क) परिश्रमं (ख) कृपां

(ग) पुस्तकं (घ) अस्त्रं

(स) (क) धर्मात् (ख) नरेशात्

(ग) अध्ययनात्

सातवाँ पाठ :

बटुआ

संकेत : जालंधर नगरस्य ----------नेत्रस्फुटित जलेन सह।

अर्थ–जालंधर नगर के पास कभी वैदनपुरम् नाम का कोई गाँव था। उस गाँव में एक निर्धन परिवार रहता था। उस परिवार में रॉबर्ट नाम का अकेला पुत्र था। एक बार रॉबर्ट जंगल में पेड़ के नीचे आँसुओं के साथ रो रहा था।

संकेत : वने तत्समये ---------- कारणम् अपृच्छत्।

अर्थ–वन में उसी समय कोई शिकारी वहाँ आया। उसको देखकर शिकारी

ने बड़ी आत्मीयता से उसके रोने का कारण पूछा।

संकेत : रॉबर्टः अवदत् ------------------------एव आसीत्।

अर्थ–रॉबर्ट बोला–''मेरी माता बहुत समय से बीमार हैं। मेरे पिता ने मुझे दवाइयाँ खरीदने के लिए धन देकर भेजा। रास्ते में किसी जगह मेरा बटुआ (purse) गिर गया। समस्त धन (पैसा) उसी में था।''

संकेत : दयया द्रवीभूतः ---------------------तु स्वर्णपणाः।''

अर्थ–दया से द्रवीभूत हुए उस शिकारी ने अपनी जेब से एक रेशम के धागों से बना बटुआ खोला। उस बटुए में सोने के सिक्के थे।

शिकारी ने बटुआ दिखाते हुए कहा–''अरे बालक! क्या यह बटुआ तुम्हारा है?''

रॉबर्ट बोला–''नहीं, मेरे पास में तो छोटा बटुआ था और उसमें पैसे थे, न कि सोने के सिक्के।''

संकेत : ''पुनः च इयं ------------------------- समर्पयत्।

अर्थ–''और यह वाला बटुआ?'' शिकारी ने दूसरा बटुआ दिखाते हुए पूछा।

''हाँ, यह है।'' उसने प्रसन्न होते हुए कहा,–'यह चमड़े से बना बटुआ मेरा है।''

शिकारी उसकी सत्यनिष्ठा से प्रसन्न हुआ। उसने रॉबर्ट को दोनों बटुए दे दिए।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	पुत्रौ	पुत्राः
	पुत्रौ	पुत्रान्
	पुत्राभ्याम्	पुत्रैः
	पुत्राभ्याम्	पुत्रेभ्यः

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
बालकः		बालकाः
बालकम्		बालकान्
बालकेन		बालकैः
बालकाय		बालकेभ्यः

2. (क) रॉबर्टः (ख) धनहानिः कारणेन
   (ग) रुग्णाः (घ) द्वे
3. (क) रुग्णाः ; माम् ; कस्मिंश्चिद् ; पणमञ्जूषा ; राशिः ; एव
4. (अ) समानार्थकपदानि
   (क) स्वर्णपणाः कनकपणाः
   (ख) प्रसन्नम् मोदनम्
   (ग) पणमञ्जूषा पणप्रकोष्ठम्
   (घ) परिवारः कुटुम्बः
   (ङ) वने विपिने
   (ब) विलोमपदानि
   (क) ग्रामे नगरे
   (ख) अरोदीत् अहसत्
   (ग) बहुकालतः अल्पकालतः
   (घ) मम तव
5. (क) परस्पर मेल कीजिए।
   (क) गन्तुम् (ख) लेखितुम्
   (ग) क्रीडतुम् (घ) कर्तुम
   (ङ) खादितुम्
   (ख) (क) लेखितुम् (ख) खादितुम्
   (ग) कर्त्तुम् (घ) गन्तुम्

आठवाँ पाठ :
अकेले मत जाओ

(गंगा के किनारे एक गाँव में धर्मशील नाम का एक ब्राह्मण रहता था।)

ग्रामवासी – विद्वानों में श्रेष्ठ ब्राह्मण को नमस्कार है।

ब्राह्मण – स्वस्ति, कल्याण होवे।

(पंडिताई करके उसका जीवकोपार्जन होता था)

एक दिन ब्राह्मण की पत्नी ब्राह्मण से बोलती है–

पत्नी – स्वामी् यह निर्धनता कब जाएगी? आज तो व्रत अथवा उपवास ही करना होगा।

ब्राह्मण – चिंता मत करो प्रियंवदा! मैं शीघ्र ही भिक्षा के लिए जाऊँगा, भीख माँगूगा और उसे लाऊँगा।

पत्नी – तो जल्दी जाओ। पेट में चूहे कूद रहे हैं। भीख लाओ और भूख मिटाओ।

(धर्मशील उठकर भीख माँगने के लिए जाना चाहता है। दरवाजे पर पहुँचकर वह बोलता है।)

ब्राह्मण – प्रियंवदा! मैं शीघ्र जाता हूँ और लाता हूँ।

पत्नी – स्वामी! रुको! अकेले मत जाओ।

ब्राह्मण – डरना बेकार है। इस रास्ते में डर नहीं है। अत: मैं अकेला ही जाऊँगा।

पत्नी – यदि जाना चाहते हो तो इस कुत्ते को पकड़ो (और) इसे लेकर जाओ।

ब्राह्मण – जैसे तुम कहती हो वैसा करता हूँ।

(तब धर्मशील उस कुत्ते को लेकर चल दिया। वह रास्ते में चलने से थककर एक पेड़ के नीचे बैठ जाता है।)

ब्राह्मण – (सोचते हुए) ओह! बड़ी गर्मी है। अत: कुछ समय के लिए यहीं बैठता हूँ।

ब्राह्मण पहले बैठता है बाद में वृक्ष के नीचे सो जाता है। दैव योग से कोई साँप वहाँ आया। कुत्ता उस साँप को देखता है।

कुत्ता – ओह! यह साँप मेरे स्वामी को डस रहा है। मैं शीघ्र मारता हूँ।

(साँप उस कुत्ते के द्वारा मारा जाता है। जागने पर ब्राह्मण सब कुछ देखता है। वह कुत्ते से कहता है–'प्रिय मित्र! इधर आओ। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मेरी पत्नी ने सत्य कहा है–'पुरुष द्वारा किसी को भी सहायक बनाना चाहिए। अकेले ही (कोई कार्य) नहीं करना चाहिए। वह ब्राह्मण प्रसन्न होता हुआ कुत्ते के साथ चला गया।

अभ्यास

2. (क) निर्धनता (ख) चिन्तां मा कुरु
   (ग) कः, कुक्कुरः (घ) सर्पम्
   (ङ) कुक्कुरस्य कृत सहायतां पश्यति
3. (क) व्रतोपवासैव (ख) मूषकाः
   (ग) भयं (घ) कुक्कुरं
   (ङ) कुक्कुरेण

4.	लिंग	विभक्ति	वचन
(क)	नपुंसकलिंग	चतुर्थ	एकवचन
(ख)	नपुंसकलिंग	प्रथमा/द्वितीया/सप्तमी	द्विवचन/द्विवचन/एकवचन
(ग)	पुंल्लिंग	सम्बोधन	एकवचन
(घ)	नपुं०/पुंल्लिंग	षष्ठी	एकवचन
(ङ)	पुंल्लिंग	द्वितीया	एकवचन

नौवाँ पाठ : पाँच मूर्ख

संकेत : केरलप्रान्ते ----------समर्थाः अभवन्।

अर्थ–केरल प्रान्त में पाँच मूर्ख रहते थे। जिस किसी तरह से उनके दिमाग में थोड़ा ज्ञान आया। इससे वे संख्या (गिनने) के ज्ञान में समर्थ हुए।

संकेत : ते स्नानाय ---------- अपि अकूर्दत्।

अर्थ–एक अवसर पर वे गंगा के किनारे गए। उनकी टोली का नायक गोविंद्र था। गंगातट पहुँचकर गोविंद्र बोला–''हम सभी (मौजूद) हैं अथवा नहीं' यह जानने के लिए मैं क्रम से संख्या सहित पानी में भेजता हूँ।'' ऐसा कहकर–एक, दो, तीन, चार संख्याओं को गिना। पुनः स्वयं 'पाँच' कहकर वह भी कूद गया।

संकेत : स्नानं कृत्वा ---------- चिंतामग्नः अभवत्।

अर्थ–स्नान करके वे पुनः नदी के किनारे पर पहुँचे। तब टोलीनायक ने पुनः गिनती की–एक, दो, तीन और चार। यहाँ पाँचवाँ कहाँ गया। यह कहकर वह चिंता में पड़ गया।

संकेत : गोविंद्रः अवदत् ---------- दुःखकारणम्?।

अर्थ–गोविंद्र बोला–''हम सब पाँच युवक थे, अब चार युवक हैं। एक युवक नहीं है।'' उसके साथ सभी युवक शोकमग्न हो गए।

तभी कोई राहगीर वहाँ आया। उन शोकमग्न युवकों को देखकर वह बोला–''तुम सब के दुःख का क्या कारण है?''

संकेत : गोविंद्रः अवदत् ---------- प्रत्यागच्छन्।

अर्थ–गोविंद्र बोला–''हम पाँच युवक स्नान करने के लिए गंगा के किनारे आए थे। अब हम चार हैं। एक युवक कहाँ गया?''

राहगीर ने उन युवकों को गिना। युवकों को गिनकर वह हँसा। तब वह गोविंद्र से बोला–तुम सब पाँच ही हो। जब तुम युवकों को गिन रहे थे तब स्वयं को नहीं गिनते। पाँचवें युवक तुम हो।''

'हम सब युवक कुशल हैं' यह जानकर वे सब युवक प्रसन्न हुए। उन्होंने राहगीर को धन्यवाद करके अपने घर की ओर प्रस्थान किया।

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	गंगातटाभ्याम्	
गंगातटस्य		
		गंगातटेषुः

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		ज्ञानाभ्याम्	
			ज्ञानानाम्
	ज्ञाने		

2. (क) संख्या ज्ञाने। (ख) गोविंद्रः
   (ग) नद्यातटम् (घ) सर्वे युवकाः।
   (ङ) आत्मानं।
3. (क) पंचमूर्खा स्नानार्थं गंगातटम् अगच्छन्।
   (ख) 'पंचमः युवकः कुत्र गतः' इतिज्ञात्वा पंचमूर्खाः चिंतामग्नाः अभवन्।
   (ग) गोविंद्र मार्गगामीम् अवदत्–'वयं पंचयुवकाः स्नानार्थं गंगातटे आगच्छम। इदानीं चत्वारः एव स्मः। एक युवकः कुत्रगतः?
   (घ) 'वयं सर्वे युवकाः कुशलाः स्मः' इति विज्ञाय पंचमूर्खाः प्रसन्नाः अभवन्।
4. (क) मस्तकेषु ; प्रसारितः (ख) गोविंद्रः
   (ग) वा ; क्रमेण ; जले (घ) पञ्चयुवकाः
   (ङ) पञ्चैव
5. (क) स्नानाय (ख) तेन
   (ग) स्नानार्थं (घ) अगणय
   (ङ) कुशलाः
6. (अ) (i)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
निवसति		निवसन्ति
निवससि		निवसथ
निवसामि		निवसामः

(ii)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
न्यवसत		न्यवसन्
न्यवसः		न्यवसत
न्यवसम्		न्यवसाम

(ब) (क) तेषां टोलीनायकः गोविंद्रः आसीत्।

(ख) गोविंद्रः 'पञ्च' कथयित्वा सः अपि कूर्दति।

(ग) इति कथयित्वा सः चिंतामग्नः भवति।

(घ) सः तान् शोकमग्नान् युवकान् दृष्ट्वा वदति।

(ङ) पथिकस्य धन्यवादं कृत्वा ते प्रत्यागच्छन्ति।

7. (क) पञ्चः (ख) सर्वे

(ग) धन्यवादं (घ) गभीरे

(ङ) टोलीनायकः

दसवाँ पाठ :
अन्योक्ति विलासः

संकेत : एक एव ---------- पुरन्दरम्॥१॥

अर्थ–पपीहा ही एकमात्र वन में रहने वाला अभिमानी पक्षी है। या तो वह प्यासा मर जाता है या इंद्र से (पानी की) याचना करता है।।1।।

संकेत ' नितरां ---------- गुणगृहीताऽसि॥२॥

अर्थ–हे कूप! तुम, मैं अधिक गहरा (और) नीचा (नीच स्वभाव) हूँ' यह सोचकर व्यर्थ खेद मत करो। तुम तो सरस हृदयी हो जो दूसरों के गुण (रस्सी) ग्रहण करते हो।।2।।

संकेत : कोकिल! ---------- समुल्लसति॥३॥

अर्थ–हे कोयल! तब तक तुम इन रागरहित करील के वृक्षों पर दिन व्यतीत करो जब तक समय अपने पर बसंत आने तक कोई रसाल (आम) नहीं आता है।।3।।

संकेत : अस्ति यद्यपि ---------- मानसं बिना॥४॥

अर्थ–सभी जगह यद्यपि पानी और कमल समूह (उपस्थित हो जाते) हैं किन्तु हंस का मन मानसरोवर के बिना नहीं लगता।।4।।

संकेत : द्राक्षा ---------- दिवंगता!॥५॥

अर्थ–सुभाषित वचनों के रस के सामने अंगूर मलिनमुख वाले हो जाते हैं, चीनी पत्थर हो जाती है और अमृत डर कर मर/भाग जाता है।।5।।

संकेत : पिबन्ति ---------- धिवदैवसमंजसम्॥६॥

अर्थ–भौरे फूलों का रस और पराग पीते हैं। हंस शैवाल (कमल नाल/काई) खाते हैं। देवता के इस सामंजस्य को धिक्कार है।।6।।

अभ्यास

1. (क) वने (ख) कूपः
   (ग) आम्रः (घ) षष्ठी, एकवचन
2. (क) चातकः पिपासितः एव म्रियते किन्तु पुरन्दर दत्त जलं पिबति।
   (ख) गुणवान पुरुषः कूपः च गुणगृहीतवन्तौ स्तः।
   (ग) तृतीये श्लोके कवि कोकिल माध्यमेन नवागन्तुकं प्रति संबोधयति। सुखासमयस्य चिंतां कृत्वा दुखस्य त्यजेत्।
   (घ) सुभाषित वचनाग्रे द्राक्षा म्लानमुखी भवति।
3. (क) कः (ख) कुत्र
   (ग) कं (घ) केभ्यः
4. (क) म्रियते, याचते (ख) नीचोऽस्मीति, ; कदापि ; वृथा
   (ग) यद्यपि ; नीरज (घ) सुधा ; भीता
   (ङ) शैवालमश्नन्ति ; धिग्दैवसमञ्जसम्
5. (क) मानी (ख) यतः
   (ग) कोऽपि (घ) शर्करा
   (ङ) पद्मेभ्यो
6. (क) (अ) (ख) (द)
   (ग) (ब) (घ) (स)
7. | | लकार | पुरुष | वचन |
   |---|---|---|---|
   | (क) | लट्लकार | प्रथम पुरुष | एकवचन |
   | (ख) | लट् लकार | मध्यम पुरुष | एकवचन |
   | (ग) | लट् लकार | प्रथम पुरुष | एकवचन |
   | (घ) | लट् लकार | प्रथम पुरुष | बहुवचन |
8. (क) वसति निवसति

	कोकिलः	पिकः
	नीरम्	जलम्
	सुधा	अमृतम्
	भृंगाः	षड्पदाः
(ख)	पिपासितो वा म्रियते याचते वा पुरन्दरम्	चातकः
	अस्ति यद्यपि सर्वत्र नीरं नीरज मण्डितम्	कूपः
	द्राक्षा म्लानमुखी जाता शर्करा चाश्मतां गता	सुभाषितम्
	कोऽपि रसाल समुल्लसति	कोकिलः

9. नीरं ; अस्ति ; मानसं

ग्यारहवाँ पाठ :
राजकुमार सिद्धार्थ

संकेत : पुरा शुद्धोदनः ----------चासीत्।

अर्थ–प्राचीन काल में शुद्धोदन नाम का कोई राजा था। उसकी कौशलदेश राजधानी थी। शुद्धोदन के इकलौते पुत्र का नाम सिद्धार्थ था। राजकुमार स्वभाव से दयालु और विनम्र था।

संकेत : एकदा राजकुँवरः ----------कुर्वन्ति स्म।

अर्थ–एक दिन राजकुमार सिद्धार्थ बगीचे में गया। यह बगीचा सुंदर और मनोहारी था। अनेक पक्षी वहाँ कूजते/चहचहाते थे। वे एक पेड़ से (दूसरे) पेड़ पर उड़ते और कलरव करते थे।

संकेत : उद्याने एकं ----------कुर्वन्ति स्म।

अर्थ–बगीचे में एक जलाशय था। वहाँ बहुत से राजहंस स्वच्छन्द घूमते थे। उनमें कुछ भूमि पर कुछ पेड़ों पर क्रीड़ा करते थे।

संकेत : उपवनस्य शोभा ----------स्वस्थः अभवत्।

अर्थ–बगीचे की शोभा देखकर राजकुमार सिद्धार्थ अत्यन्त प्रसन्न हुआ। अचानक एक राजहंस आकाश से सिद्धार्थ के पास जमीन पर गिरा। वह बाण से

घायल था। वह राजहंस पीड़ा से करुण क्रंदन कर रहा था। हंस को देखकर सिद्धार्थ भी दया-द्रवित हो गया। वह उस हंस को तालाब के किनारे लाया। उसका घाव साफ जल से धोया। उसकी सेवा अथवा स्नेह से वह हंस स्वस्थ हो गया।

संकेत : तस्मिन्नैव काले ---------- अयं मम हंसः।

अर्थ–उसी समय देवदत्त वहाँ आ पहुँचा। उसने सिद्धार्थ से कहा–''यह हंस मुझे दे दो।''

सिद्धार्थ–''यह हंस मेरा है। मैं इस हंस को नहीं दूँगा।''

देवदत्त–''यह हंस मेरे बाण से घायल हुआ है, अतः हंस मेरा है।''

सिद्धार्थ–''मैंने इसकी रक्षा की है, यह हंस मेरा है।''

संकेत : एवं बहुविवादः ----------सिद्धार्थस्य अस्ति।

अर्थ–इस प्रकार बहुत झगड़ा हुआ। दोनों न्यायाधीश के पास गए। और अपने-अपने पक्ष को कहा। न्यायाधीश ने निर्णय किया।

न्यायाधीश – ''रक्षक भक्षक से महान (बड़ा) होता है। इसलिए यह हंस सिद्धार्थ का है।''

अभ्यास

1. (ब)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	शुद्धोदनाभ्याम्	
	शुद्धोदनयोः	शुद्धोदनानाम्
शुद्धोदने		शुद्धोदनेषु
हे शुद्धोदन!	हे शुद्धोदनौ!	
	देवदत्ताभ्याम्	
	देवदत्तयोः	
देवदत्ते		
	हे देवदत्तौ!	

2. (क) कोशल देशः। (ख) शुद्धोदनस्य।
   (ग) सिद्धार्थः (घ) बाणेन
   (ङ) न्यायाधीशस्य समक्षम्।

3. (क) राजकुँवरः सिद्धार्थः स्वभावेन दयालुः विनम्रः चासीत्।

(ख) उपवने अनेकाः खगाः कूजन्ति स्म। ते विटपात्-विटपे उड्डन्ति स्म। उद्याने राजहंसा स्वच्छंदः विचरन्ति स्म।

(ग) राजहंसाः वृक्षेषु क्रीडां कुर्वन्ति।

(घ) न्यायाधीशः निर्णयम् अकरोत्-''रक्षकः भक्षकात् प्रशस्यतरः भवति!

4. (क) पुत्रस्य (ख) इदम्

(ग) काले (घ) रक्षाम्

5. (क) शुद्धोदनस्य (ख) विटपे

(ग) खात् (घ) वृणं

6. (क) (यूयं) उच्चैः वदत।

(ख) (यूयं) तूष्णीं तिष्ठत।

(ग) (यूयं) चित्रं पश्यत।

(घ) (यूयं) श्लाघनीयं लिखत।

(ङ) (यूयं) आयुष्मान भवत।

तृतीया

पहला पाठ :
प्रार्थना

अर्थ – शरदकालीन चन्द्रमा और बर्फ के हार के समान श्वेत वस्त्रों से सुशोभित हुई। हाथ में वीणा धारण की हुई, श्वेत कमल पर आसीन, ब्रह्मा और शिव आदि देवताओं से सदैव वंदना की जाती हुई, माँ भगवती सरस्वती। मेरे अन्दर समायी हुई सम्पूर्ण जड़ता (अज्ञानता) को दूर करती हुई, हे जगत जननी सरस्वती माँ। मेरी रक्षा करें।

दूसरा पाठ :
चिड़िया और कौए की कहानी

संकेत : शामली वृक्षे ---------- वत्स्यामः।

अर्थ–शामली के पेड़ पर चिड़िया ने एक घोंसले का निर्माण किया। यह घोंसला अत्यंत सुंदर था। एक दिन सभी चिड़ियाँ दाने के लिए इधर-उधर गई थीं। उसी समय कुछ कौए वहाँ आए और बलपूर्वक घोंसले को कब्जा लिया। वे सभी कहने लगे–''अरी चिडियाओ! यह हमारा घर है। इसे तो हमने बनाया है। अतः यहाँ हम रहेंगे।''

संकेत : चटका अकथयन् ---------- स्वामी भविष्यति।

अर्थ–चिडियाँ बोलीं–''तुम सब झूठ बोलते हो। यह घोंसला हमारा ही है।'' इससे उन दोनों के बीच झगड़ा हो गया। वे विवाद के निर्णय के लिए पक्षियों के राजा गरुड के पास गए। गरुड ने दोनों का विवाद भलीपूर्वक सुना। गरुड़ बहुत विचार करके बोला–''आप सब पुनः अपने-अपने घोंसले का निर्माण करें। जिसका घोंसला वैसा ही होगा वही इस घोंसले का वास्तविक स्वामी होगा।''

संकेत : इति श्रुत्वा ---------- स्वीकुर्म।

अर्थ–यह सुनकर कौए किंकर्त्तव्यमूढ हो गए। वे वैसे घोंसले को बनाने में असमर्थ थे। वे बोले–''यह निर्णय हम स्वीकार नहीं करते हैं।''

संकेतः गरुडः अजानयत ---------- उत्पतन्।

अर्थ–गरुड जान गया–सभी कौए झूठ बोल रहे हैं। उनका मनोरथ व्यर्थ है। अतः उसने निर्णय किया–चिडिया ही वास्तविक स्वामी है। कौए मलिन मुखी होकर (लज्जित होकर) दूसरी जगह उड़ गए।

अभ्यास

1. (ख)

द्विवचन	बहुवचन
गरुडौ	गरुडाः
गरुडौ	गरुडा
गरुडाभ्याम्	गरुडैः
गरुडाभ्याम्	गरुडेभ्यः

2. (क) अन्नेभ्यः (ख) अति सुंदरम्
   (ग) गरुडः (घ) कौरवाः
   (ङ) चटका
3. (क) चटका शामली वृक्षे नीडनिर्माणम् अकरोत्।
   (ख) कौरवाः अकथयन् – रे चटकाः! इदमस्माकं गृहम्।
   (ग) गरुड़ः बहुविचारं कृत्वा अवदत्–"भवन्त, पुनः स्व-स्व नीडनिर्माणं कुरुथ।
   (घ) सः अनिर्णयत् – चटका एव वास्तविक स्वामी अस्ति।
4. (क) अशुद्धं (ख) शुद्धं
   (ग) अशुद्धं (घ) शुद्धं
   (ङ) अशुद्धं
5. (क) सः सत्यं वदति। (ख) अहम् तत्र वत्स्यामि।
   (ग) कौरवः मिथ्या वदति। (घ) कौरवः म्लानमुखी अभवत्।
   (ङ) चटका नीडनिर्माणं करोति।

तीसरा पाठ :
छोटी घंटी

संकेत : रामदासः एकः ---------- मूल्यवती आसीत्।

अर्थ–रामदास एक ग्वाले का पुत्र था। वह रोजाना गाय चराने के लिए जंगल में जाता था। उसकी प्रत्येक गाय के गले में एक-एक घंटी बँधी हुई थी। उन गायों में जो गाय अति मनोहारी और रूपवती थी उसके गले में घंटी बहुमूल्य थी।

संकेत : एकदा रामदासः विपिने ---------- कति मूल्यः अस्ति?

अर्थ–एक दिन रामदास जंगल में रोजाना की तरह गाय चराने के लिए गया हुआ था। तभी कोई अजनबी मनुष्य जंगल के रास्ते से आया और बोला–'यह घंटी अत्यंत शोभनीय है। इसका क्या मूल्य है?''

संकेत : ''केवलं विंशति ---------- मानवः अवदत्।

अर्थ–''केवल बीस रुपये।'' रामदास ने उत्तर दिया। ''केवल बीस रुपये'! आश्चर्य है! मैं तुम्हें चालीस रुपये देता हूँ। यह घंटी मुझे दे दो।' अजनबी आदमी ने कहा।

संकेत : तं वचनं श्रुत्वा ---------- रूप्यकाणि मे देहि।''

अर्थ–उस वचन को सुनकर रामदास प्रसन्न हुआ। शीघ्रता से ही घंटी लेकर रामदास अजनबी के पास गया और बोला–अरे राहगीर! इस घंटी को पकड़ो। (और) चालीस रुपये मुझे दो।''

संकेत : घंटिकां दत्त्वा ---------- कुत्र चरति।

अर्थ–घंटी देकर रुपये लेकर वह घर चला गया। अब घंटी के बिना गाय की गर्दन खाली हो गई। घंटी के अभाव में रामदास के सामने समस्या आ गई। वह जानने में असमर्थ हो गया कि इस समय वह गाय कहाँ चर रही है।

संकेत : एकदा सा धेनुः ---------- स्वविवेकं त्यजति।

अर्थ–एक दिन वह गाय दूर चली गई। अवसर मिलने पर उस अजनबी आदमी ने गाय का हरण कर लिया। गाय चुरा लेने को सुनकर रामदास रोने लगा। उसने समस्त घटना अपने पिता से कही। उसने कहा–''पिताजी! मुझे कुछ भी अनुमान नहीं था, वह अजनबी मनुष्य मेरी घंटी का अधिक मूल्य देकर ऐसा कार्य करेगा।''

पिता ने कहा–''लोभ पाप का कारण है। लोभ से (में) मनुष्य अपना विवेक त्याग देता है।

अभ्यास

1. (क) गोपालकस्य (ख) गोचारणाय
   (ग) विपिनमार्गात् (घ) विशंति रूप्यकाणि
   (ङ) लोभः
2. (क) धेनूनां कण्ठे एकैका क्षुद्रा घण्टिका विराजते स्म।
   (ख) यः धेनु अति मनोहरा, रूपवती आसीत् तस्य कण्ठे घंटिका अति मूल्यवती आसीत्।
   (ग) इयं घंटिका अति श्लाघनीया अस्ति। अस्या कति मूल्यः अस्ति।
   (घ) अज्ञात मानवः घंटिकायाः चत्वारिंशतरूप्यकाणि दातुम् उत्सृजयेत्।
   (ङ) रामदासः अवदत्–''भो पथिक! ग्रहाण इमां घंटिकाम्। चत्वारिंशतानि रूप्यकाणि मे देहि।''
   (च) सः ज्ञातुम् असमर्थः अभवत् यत् निवर्तमाने सा धेनुः कुत्र चरति।
   (छ) धेनवे अपहरणं श्रुत्वा रामदासः अरोदीत्।

3. (क) कुत्र (ख) केषाम्
(ग) का (घ) कस्मै
(ङ) कस्य

4. (क) गोपालकस्य धेनुरक्षकस्य
पुत्रः सुतः
कण्ठे ग्रीवायाम्
क्षुद्रा लघु
वीक्ष्य दृष्ट्वा
(ख) रूपवती कुरूपा
उत्तरम् प्रश्नम्
अगच्छत् आगच्छत्
नीत्वा त्यक्त्वा
ददामि नयामि

5. (क) दृष्ट्वा (ख) दृष्ट्वा
(ग) नीत्वा (घ) दत्त्वा ; गृहीत्वा
(ङ) ज्ञातुम्

6. तेषु ; भाषायां ; भारतस्य ; अस्ति

7. (क)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
गच्छत्		गच्छन्
	गच्छतम्	
गच्छम्	गच्छाव	

(ख) (1) गच्छन् (2) गच्छतम्
(3) गच्छाव (4) गच्छत
(5) गच्छत् (6) गच्छ

चौथा पाठ :
गुरुजी की दक्षिणा

संकेत : द्वापरे महाभारतकाले ---------- पारंगतः आसीत्।

अर्थ–द्वापरयुग (में) के महाभारत काल में द्रोण नाम के धनुर्वेद के आचार्य हुए हैं। वे केवल धनुर्विद्या में नहीं, अपितु समस्त शस्त्र-अस्त्र संचालन में निपुण और पारंगत थे।

संकेत : द्रोणाचार्यः निर्जने वने ---------- सर्वश्रेष्ठः अभवत्।

अर्थ–द्रोणाचार्य ने निर्जन वन में शिष्यों को शिक्षा दी। वहाँ पाण्डुपुत्र 'पाण्डवों' और धृतराष्ट्र पुत्र 'कौरवों' ने शिक्षा प्राप्त की। उन राजपुत्रों में धनुर्विद्या में अर्जुन सर्वश्रेष्ठ हुए।

संकेत : एकदा एकलव्यः ---------- स्वीकरोतु'' इति।

अर्थ–एक दिन एकलव्य नामक कोई भीलराज का पुत्र द्रोणाचार्य के पास जाकर विनम्रता के साथ बोला–''हे गुरुदेव! आपके पास में मैं अस्त्रविद्या सीखने के लिए आया हूँ। मुझे (आप) अपना शिष्य स्वीकार करें।''

संकेत : द्रोणाचार्यः उत्तरम् ---------- निपुणः अभवत्।

अर्थ–द्रोणाचार्य ने उत्तर दिया–'तुम भील के पुत्र हो। तुम भील हो। अतः तुम्हें अस्त्र विद्या नहीं दूँगा।'' एकलव्य निराश हुआ परंतु जंगल में जाकर गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति (उसने) बनाई। मूर्ति में गुरुरूप मानकर उसके सामने निरंतर अभ्यास करने लगा। सतत् अभ्यास से थोड़े समय में ही वह अस्त्र विद्या में निपुण हो गया।

संकेत : एकस्मिन् अवसरे ---------- मुखान् अविंध्यत्।

अर्थ–एक समय द्रोण राजपुत्रों के साथ शिकार के लिए वहाँ आए। उनके कुत्ते उनसे आगे थे। वे कुत्ते काले वर्णवाले एकलव्य को देखकर भौंकने लगे। यह देखकर एकलव्य ने कुत्तों के मुखों को बींध दिया।

संकेत–विंधमुखान् दृष्टवा् ---------- तथा करोमि।

अर्थ–बींधे हुए मुखों को देखकर राजपुत्रों के साथ-साथ द्रोणाचार्य भी चकित हुए। द्रोण ने पूछा–''रे धनुर्धारी! तुम कौन हो? और तुम्हारे आचार्य कौन हैं?'' एकलव्य ने उत्तर दिया–''निषादराज का पुत्र मैं एकलव्य नाम वाला आपका शिष्य हूँ। आपके चरणों में नमस्कार करता हूँ।'' यह बात सुनकर द्रोण पुत्र विस्मित हुए। वह बोले–''किंतु मेरे द्वारा तुम्हारी प्रार्थना अस्वीकार की गई तब मैं तुम्हारा आचार्य कैसे हुआ?'' एकलव्य ने उनको बनाई प्रतिमा के समीप ले जाकर कहा–''आचार्य! आपके सामने (किए) सतत् अभ्यास से मैं धनुर्विद्या में निपुण हुआ हूँ। तब द्रोणाचार्य ने सोचा–''यदि एकलव्य धनुर्विद्या में सर्वश्रेष्ठ हो गया तो राजपुरुष अर्जुन के लिए दिया गया आशीर्वाद व्यर्थ हो जाएगा। अतः ऐसा करता हूँ।''

संकेत : द्रोणः एकलव्यं ---------- समर्पयत्।

अर्थ–द्रोण एकलव्य से बोले–''पुत्र! यदि तुम मेरे शिष्य हो तो मुझे गुरुदक्षिणा दो।'' एकलव्य ने झुककर कहा–''आप आज्ञा दीजिए गुरुदेव!'' द्रोण बोले–''मुझे दक्षिणा के रूप में अपने दाहिने हाथ का अँगूठा दो।'' एकलव्य ने बिना विलम्ब किए अपना अँगूठा

काटकर गुरु के चरणों में समर्पित कर दिया।''

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	एकलव्यौ	
एकलव्यम्		
एकलव्येन		एकलव्यैः
	एकलव्याभ्याम्	
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अर्जुनः		
	अर्जुनौ	
अर्जुनेन		
	अर्जुनाभ्याम्	अर्जुनेभ्यः

2. (क) सकाशात् ; माम् ; स्वीकरोतु ; उत्तरम् ; पुत्रः
   (ख) निराशः ; प्रतिमाम् ; मूर्ते ; निधाय ; निरंतरम् ; कालेन
3. (क) (i) शिष्यः (ii) अश्रेष्ठः
   (iii) आशा (iv) शस्त्रविद्या
   (v) सरमा
   (ख) (i) गत्वा (ii) निधाय
   (iii) नि (iv) क्त्वा
   (v) श्रु
4. (क) (क) दृष्टुम् (ख) पठितुम्
   (ग) हन्तुम् (घ) खेलितुम्
   (ङ) दोग्धुम्
   (ख) (i) दुष्टम् (ii) पठितुम्
   (iii) हन्तुम् (iv) खेलितुम्
   (v) दौग्धुम्

पाँचवा पाठ :
मूर्ख की (से) मित्रता

संकेत : वृक्षात् नातिदूरे ---------- भवेयम्।''

अर्थ–पेड़ के पास एक तालाब था। उस तालाब में एक मेढक था। उसकी मित्रता

गिलहरी के साथ थी।

एक दिन मेढक ने गिलहरी से कहा–''मित्र! मेरी अभिलाषा है कि मैं विवाह के बंधन में बँध जाऊँ।

संकेत : चमरपुच्छः अवदत् ---------- कारयिष्यामि।

अर्थ–गिलहरी ने कहा–''यह तो खुशी का विषय है। विवाह में मैं बाजों के साथ नाचूँगी। यहाँ (इधर) बाजे बजेंगे वहाँ (उधर) ताल ध्वनि के साथ मैं नाचूँगी। आओ, मेरे साथ। (मैं) तुम्हारा विवाह राजकुमारी के साथ कराऊँगी।''

संकेत : तौ चलतः ---------- प्रासादं पश्य।''

अर्थ–वे दोनों लक्ष्य के प्रति चलते हैं। बहुत समय तक चलने से मेढक थक गया। वह बोला– ''मित्र! राजमहल कहाँ है? और वह राजकुमारी किधर है?'' गिलहरी ने कहा–''अरे मेढक! तुम्हारा लक्ष्य दूर नहीं है। हम दोनों टीले के पीछे जा रहे हैं। यदि इस स्थान को जानने की इच्छा करते हो तो इस पेड़ पर चढ़कर महल देख लो।''

संकेत : दर्दुरः अवदत् ---------- अदर्शयत् च।

अर्थ–मेढक ने कहा–''किंतु मैं चढ़ने में असमर्थ हूँ। और इधर यह ताड़ का पेड़ है।'' गिलहरी ने समुचित उपाय किया। उसने उसे पीठ पर बैठाकर शीघ्र ही पेड़ के ऊपर ताड़ के पत्ते पर स्थापित किया/बैठा दिया। वहाँ से स्थित होकर महल देखना संभव हुआ। मेढक गहरी निगाह से उसे बहुत समय तक देखता रहा और मन में राजकुमारी के सपने देखता रहा।

संकेत : चमरपुच्छः तां ---------- हृदयेन अवदत्।

अर्थ–गिलहरी उसे वहीं छोड़कर जमीन पर उतर गई। जब मेढक को अपना ख्याल आया, तब उसे पश्चाताप हुआ। वह दुखी हृदय से बोला–

संकेत : ''तालवृक्षेषु ---------- मम जीवनम्।''

अर्थ– ''मूर्ख संग की मित्रता ताड़ पेड़ पर चढ़े रह गए।
ये ताड़ ही जीवन मेरा ब्याह के सपने अधूरे रह गए।।''

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	बहुवचन
दर्दुरात्	दर्दुरेभ्यः
दर्दुरस्य	दर्दुराणाम्
दर्दुरे	दर्दुरेषु
हे दर्दुर!	हे दर्दुराः!

एकवचन	द्विवचन
चमरपुच्छात्	चमरपुच्छाभ्याम्
चमरपुच्छस्य	चमरपुच्छयोः
चमरपुच्छे	चमरपुच्छयोः
हे चमरपुच्छ!	हे चमरपुच्छौ!

2. (क) दर्दुरः। (ख) स्वविवाहबंधनस्य।
   (ग) राजप्रासादे। (घ) तालवृक्षः।
3. (क) दर्दुरस्य मैत्री चमरपुच्छेन सह आसीत्।
   (ख) चमरपुच्छः अवदत्–''अयं तु हर्षविषयः। विवाहे अहं वाद्ययंत्रैः सह नर्तिष्यामि। अत्र वाद्ययंत्राः वदिष्यन्ति तत्र तालध्वनैः सह अहं नर्तिष्यामि। आगच्छ, मया सह। तव विवाहं राजकौमार्यया सह कारयिष्यामि।''
   (ग) दर्दुरः अवदत्–''अहम् आरूढने असमर्थोऽस्मि।''
   (घ) चमरपुच्छः दर्दुरं त्यक्त्वा भूमौ अगच्छत्।
4. (क) चमरपुच्छ मित्र-विवाहे **कैः** सह नर्तिष्यति?
   (ख) आवां **कस्मात्** पृष्ठभागं गच्छावः?
   (ग) **केन** दर्दुरः श्रान्तः अभवत्?
   (घ) चमरपुच्छः तत्रैव त्यक्त्वा **कुत्र** अवतरत्?
5. (क) अहं विवाहसमये नर्तिष्यामि।
   (ख) अहं तव विवाहं राजकौमार्यया सह कारयिष्यामि।
   (ग) अहं तालवृक्षात् अवतरिष्यामि।
   (घ) अहं समुचितोपायं करिष्यामि।
   (ङ) अहं लक्ष्यं प्रति गमिष्यामि।
6. (क) विवाहबन्धने (ख) अस्मिन् वृक्षे
   (ग) राजप्रासादं (घ) मनस्वैव, स्वप्नम्
   (ङ) आत्मसंज्ञानम् ; पश्चातापम्
7. (क) क्त्वा (ख) क्त्वा
   (ग) तरित्वा (घ) दग्ध्वा
   (ङ) दा

छठा पाठ :
अन्योक्ति विलास

संकेत : रे रे चातक! ---------- दीनं वचः॥१॥

अर्थ–अरे पपीहे! मित्र, कुछ क्षण के लिए मेरी बात को सावधानीपूर्वक सुनो। इस आकाश में अनेक बादल होते हैं किंतु सभी एक जैसे (स्वभाव वाले) नहीं होते। इनमें से कुछ वर्षा करके पृथ्वी को गीला करते हैं कुछ वृथा ही गरजते हैं। तुम जिस-जिस को देखो उसके आगे दीन वचन मत बोलो।।1।।

संकेत : न वै ताडनात् ---------- तोलयन्ति॥२॥

अर्थ–न तो मुझे पीटने पर दुःख होता है, न आग में तपाने से दुःख होता है, न मुझे किसी को बेच देने पर दुःख होता। सोना कहता है, मुझे तो तब दुख होता है जब लोग मुझे गुंजा के साथ तोलते हैं।।2।।

संकेत : भो राजहंस! ---------- मूढलोकाः ॥३॥

अर्थ–हे राजहंस! तुम इधर (इस संसार के तालाब में) क्यों आ गए हो? ये जो बगुले हैं ये ही हंस की प्रतीति करा रहे हैं। तुम शीघ्रता से अपने स्थान को वापस चले जाओ। कहीं ऐसा न हो यह मूर्ख संसार तुम्हें ही बगुला कहने लगे।।3।।

संकेत : रात्रिर्गमिष्यति ---------- उज्जहार॥४॥

अर्थ–रात जाएगी, सुंदर सुबह होगी, सूर्य निकलेगा, कमल खिलेगा।' इस प्रकार कमल कोश में (कमल के अंदर) बैठा भौंरा सोच ही रहा था कि महान दुःख है कि उस नलिनी (कमल) को हाथी ने उखाड़ दिया।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	राजहंसाभ्याम्	राजहंसेभ्यः
राजहंसस्य		राजहंसानाम्
राजहंसे	राजहंसयोः	
भो राजहंस!		

2. (क) मेघजलं (ख) गुञ्जया सह तौलम्
   (ग) बकानां मध्ये (घ) नलिनीम् (ङ) मृणालम्
3. (क) सावधान मनसा (ख) मे ; तदेकं
   (ग) योऽसौ ; इह ; इति (घ) रात्रिर्गमिष्यति
   (ङ) मृणालपटली

4. (क) वसुधां गर्जन्ति केचिद् वृथा (ख) सरोवरस्य
(ग) पुनः स्वभूमौ। (घ) कोषगते द्विरेफे
(ङ) तापनाद् वह्निमध्ये।

5. (क) चातकः पपीहः
मित्र सखा
सुवर्णस्य कनकस्य
गजः हस्तिः

सातवाँ पाठ :
जरासंध का वध

संकेत : महाभारते जरासंधः ---------- भीमेन अभवत्।

अर्थ–महाभारत (के युद्ध) में जरासंध नाम का कौरव पक्ष का सिपाही था। वह युद्ध कौशल में निपुण था। मल्लयुद्ध (कुश्ती) के समय जरासंध की मृत्यु भीम के द्वारा हुई।

संकेत : बालकः जरासंधः ---------- चिंतितः अभवत्।

अर्थ–बालक जरासंध राजा वृहद्रथ का पुत्र था। राजा वृह्द्रथ के समय बीत जाने पर जब कोई संतान नहीं हुई। तब वे चिंतित हुए।

संकेत : एकदा एकः सिद्धपुरुषः ---------- अददात्।

अर्थ–एक दिन एक सिद्ध पुरुष उनके महल में उपस्थित हुए। तब राजा वृहद्रथ के लिए सिद्ध पुरुष द्वारा एक उपाय किया गया। उस सिद्ध पुरुष ने राजा वृहद्रथ के लिए एक आम फल दिया।

संकेत : तस्य सिद्धपुरुषस्य ---------- अददात्।

अर्थ–उस सिद्ध पुरुष का अतिथि-सत्कार करने के बाद और उनके जाने के बाद उस राजा ने उस फल को लेकर दो भागों में बाँटकर आधा-आधा करके अपनी दोनों पत्नियों को खाने को दिया।

संकेत : अथ विभाजनेन ---------- संज्ञा अभवत्।

अर्थ–इस प्रकार फल के विभाजन करने से समय के बाद दो आधे-आधे शरीर रूप में दोनों (स्त्रियों) ने एक पुत्र को जन्म दिया। अपने पुत्र के इस रूप को देखकर दोनों माताएँ भयभीत हो गईं। उन दोनों मांस के पिण्डों को जरा नाम की किसी शल्यचिकित्सा में निपुण राक्षसी ने वहाँ आकर एक कर दिया। इसी कारण से उनके पुत्र का नाम 'जरासंध' पड़ा।

संकेत : महाभारतकाले ---------- वीरगतिं प्राप्तवान्।

अर्थ–महाभारत के समय में जब कौरव–पाण्डवों के बीच युद्ध हुआ तब यह वीर कौरव पक्ष में अथवा दुर्योधन के पक्ष में युद्ध में निरत हुआ। जरासंध का भीम के साथ मल्लयुद्ध हुआ। उस युद्ध में भीम को हतोत्साहित देखकर श्रीकृष्ण ने कूटनीति के अनुसार भीम को संकेत किया। संकेत रूप में कृष्ण ने एक तिनके को लेकर बीच से दो भागो में बाँट दिया। संकेत मात्र से भीम ने भी जरासंध के पैर के ऊपर पैर रखकर और दूसरे को हाथों से पकड़कर शरीर के दो भाग कर दिए। शरीर के अलग–अलग होने से जरासंध वीरगति को प्राप्त हुआ।

अभ्यास

1. (क) कौरवपक्षस्य (ख) जरासंधः
   (ग) सिद्धपुरुषः (घ) जरानामाख्या
   (ङ) वपु
2. (क) वृहद्रथस्य चिंताया कारणं तस्य संतानोपत्ति आसीत्।
   (ख) फलमादाय वृहद्रथः द्वौ भागौ विभज्य पत्नीभ्याम् अददात्।
   (ग) जरासंध जन्मावसरे द्वौ अर्द्धार्द्धवपुरुषे आसीत्।
   (घ) महाभारते कौरव–पाण्डवयोर्मध्ये युद्धः अभवत्।
   (ङ) जरासंधेन सह भीमस्य युद्धम् अभवत्।
   (च) तृण संकेत क्रियां कृत्वा कृष्णः जरासंधं मारयितुं भीमाय निर्देशयत्।
3. (क) कः (ख) कुत्र (ग) कस्य
   (घ) कम् (ङ) किम्
4. (क) कौरवपक्षे दुर्योधनपक्षे
   निपुणः चतुरः
   संतति प्रजा
   भार्या पत्नी
   नृपः नरेशः
   (ख) कौरवाः पाण्डवाः
   विभज्य संयुज्य
   स्वपादम् परहस्तम्
   कूटनीतिः सम्यक्नीतिः
   युद्धम् संधिः

5. (क) क्रीडेत् (ख) आगच्छेत्
(ग) वसेत् (घ) कुर्यात्
(ङ) पठ

6.

	मूल पद	विभक्ति	वचन
(क)	भीम	षष्ठी	एकवचन
(ख)	जरासंध	तृतीया	एकवचन
(ग)	संकेत	सप्तमी	एकवचन
(घ)	युद्ध	द्वितीया	एकवचन
(ङ)	वृहद्रथ	चतुर्थी	एकवचन

	मूल पद	पुरुष	वचन	लकार
(क)	दा	प्रथम	एकवचन	लङ् लकार
(ख)	जन्	प्रथम	बहुवचन	लङ् लकार
(ग)	दृश	प्रथम	एकवचन	लट् लकार
(घ)	स्था	प्रथम	बहुवचन	लङ् लकार

7. (क) वृहत् + रथः (ख) काल + अन्तरे
(ग) अर्द्ध + अर्द्धः (घ) एक + आकारम्
(ङ) सत्कार + उपरान्ते (च) हत् + उत्साहितम्

आठवाँ पाठ :
परोपकार करने वाला वैद्य – नीम का पेड़

(नीम का पेड़ आम के पेड़ के साथ वार्तालाप करता है।)

नीम पेड़ – रे आमवृक्ष! आज तो आप अत्यन्त प्रसन्न हो। क्या कारण है?

आम पेड़ – हे नीमवृक्ष! आपके मधुर स्वर को सुनकर आनन्दविभोर हुआ। तुम धन्य हो।

नीम पेड़ – ऐसा है। कोयल के मधुर स्वर को सुनकर आनन्दविभोर हो गए हो। तुम धन्य हो। मेरी तो सभी निंदा करते हैं।

आम पेड़ – ऐसा नहीं है। आप तो परोपकारी हो। आप प्रत्येक अंग के रोग को मारते हैं अथवा नष्ट करते हो।

नीम पेड़ – मेरे कडुवे पत्ते रोग को हरते हैं अथवा मेरे प्रत्येक अंग रोग का नाश करते हैं। यह सत्य है किंतु मेरे फल भी कडुवे हैं।

आम पेड़ – तुम क्यों चिंता कर रहे हो?

नीम पेड़ – नहीं, नहीं। मैं चिंता नहीं कर रहा हूँ। तुम ही मुझको 'परोपकारी वैद्य' कहकर प्रशंसा करते हो।

आम पेड़ – झूठी प्रशंसा नहीं करता हूँ। वस्तुत: आप दूसरों का उपकार करते हो। परोपकारी मनुष्य पृथ्वी पर महान जीव होता है। अत: तुम महान हो। तुम्हारा जीवन दूसरों के लिए उपकार ही है।

नीम पेड़ – सत्य कहते हो वह ही महान है जो दूसरों पर उपकार करता है। वस्तुत: हमारा जीवन परोपकार के लिए ही है।

आम पेड़ – हाँ, जलचर, थलचर अथवा नभचरों को हम दोनों की आवश्यकता है।

नीम पेड़ – मैं अच्छी तरह जानता हूँ। प्राणियों के लिए हम दोनों की आवश्यकता है। यह तुम्हारा कहना अतीव ज्ञानप्रद है।

(संतुष्ट होकर नीम का पेड़ चुप हो जाता है।)

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
		कोकिला:
	कोकिले	
	कोकिलाभ्याम्	
कोकिलायै		
एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	प्रशंसे	
प्रशंसाम्		
		प्रशंसाभि:
	प्रशंसाभ्याम्	

2. (क) आम्रवृक्षेण सह (ख) निम्बवृक्ष:
   (ग) कटुपत्राणि (घ) निम्बवृक्ष:
   (ङ) आम्रनिम्ब वृक्षयो:
3. (क) आम्रवृक्षस्य प्रसन्नताया: कारणं कोकिलाया मधुर स्वरम् अस्ति।
   (ख) निम्बवृक्षाणि कटुपत्राणि व्याधिं हन्ति।
   (ग) परोपकारी जन: धरायां महान् जीव: भवति।
   (घ) निम्ब-आम्र वृक्षयो: जीवनं परोपकाराय एव भवति।

4. (क) शुद्ध (ख) शुद्ध
(ग) शुद्ध (ग) अशुद्ध
(ङ) अशुद्ध

5. (क) कोकिलायाः ; आनंदविभोरः ; धन्यः ; निन्दन्ति ; व्याधिं
(ख) जानामि ; उभयो ; अस्ति ; कथनम्

6. अप्रसन्नः कटुम्
हताशः निन्दाम्
सत्यम्

7. (क) कूर्दित्वा (ख) क्त्वा
(घ) क्त्वा (घ) कृ
(ङ) क्रीडयित्वा

नौवाँ पाठ :

जवाहर लाल महोदय

संकेत : जवाहरलाल नेहरू ---------- स्वरूपरानी आसीत्।

अर्थ–जवाहर लाल नेहरू महोदय का जन्म 14 नवम्बर 1889 ई० में काश्मीर के सारस्वत ब्राह्मण कुल में प्रयाग (इलाहाबाद) के मीरगंज नामक स्थान पर हुआ था। इनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू और माता स्वरूपरानी थी।

संकेत : आजन्मनः अस्य ---------- पर्यपालयत्।

अर्थ–जन्म से पहले इनके पूर्वज दिल्ली नगर में नेहर नदी के किनारे रहते थे। इसी कारण यह 'नेहरू' इस उपनाम से प्रसिद्ध हुए। उस समय पण्डित मोती लाल प्रयाग के सभी वकीलों में प्रसिद्ध थे। वह (वे) आनंद भवन में रहते थे। बहुत से अंग्रेज भी इनके घर आने को उत्सुक थे। अनेक बार उन्होंने एक ही मुकदमे में लाखों रुपए अर्जित किये थे। पण्डित जवाहर लाल नेहरू अपने पिता की इकलौती संतान थे। जिससे उन्होंने उनको राजपुत्र के समान पाला।

संकेत : जवाहरलाल नेहरू महोदयः ---------- प्रतिज्ञाम् अकरोत्।

अर्थ–जवाहरलाल नेहरू महोदय ने पाँच वर्ष तक अपने घर में ही शिक्षा ग्रहण की। तब वे इंग्लैण्ड में 'हैरो शिक्षण संस्था' में प्रविष्ट हुए। उसके बाद 'ट्रिनिटी कैम्ब्रिज' विश्वविद्यालय में शिक्षा ग्रहण करके उन्होंने बी०एस-सी०, एम०ए० उपाधि प्राप्त की। अपने अध्ययन काल में ही उन्होंने अपनी मातृभूमि को स्वाधीन करने के लिए प्रतिज्ञा की।

संकेत : प्रथमं सः ----------उल्लेखं न कुर्मः।

अर्थ–पहले उन्होंने अपने पिता के साथ प्रयागीय प्रधान न्यायालय में वकालत का कार्य आरंभ किया। सन् 1916 ई० में उनका विवाह कमला नाम की कन्या के साथ हुआ। इंदिरा गाँधी उनकी पुत्री थीं। सन् 1918 ई० में उन्होंने भारतीय स्वशासन संस्था का मंत्री पद सँभाला। और वहाँ पूर्णनिष्ठा से आन्दोलन किया। सन् 1923 ई० में वे कोकोनाड़ा कांग्रेस में प्रथम बार राष्ट्रीय महासभा के प्रधानमंत्री निर्वाचित हुए। सन् 1929 ई० में वे अखिल भारतीय श्रमिक संघ राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष हुए। सन् 1936-37 ई० में उन्होंने सम्पूर्ण देश की यात्रा की। सन् 1938 ई० में वे चीन और स्पेन देश की यात्रा करके अपने देश लौटे। 1939 ई० में उन्होंने गोरखपुर में चार साल कारागार सहा। 1942 ई० में उन्हें मुम्बई नगरी में गाँधी आदि के साथ शासकों द्वारा पकड़ लिया गया। पुनः सन् 1945 ई० में वे कारागार से मुक्त हुए। इस प्रकार उनकी जीवन संबंधी बहुत सी घटनाएँ हैं जिनका उल्लेख हम नहीं कर रहे हैं।

संकेत : पंडित जवाहरलाल नेहरू ---------- इत्यादयः।

अर्थ–पण्डित जवाहर लाल नेहरू महोदय विश्वप्रसिद्ध नेता थे। वे महान क्रांतिकारी, गम्भीर विचारक, अध्ययनशील, उद्भट लेखक, राजनीति शास्त्र के महान विशारद् और अंग्रेजी भाषा के पंडित थे। उन्होंने बहुत से ग्रंथ लिखे। जैसे-मेरी आत्मकथा, विश्व इतिहास का प्रकाश, भारत की समस्या, पिता के पत्र पुत्री के प्रति, स्खलन संसार इत्यादि।

संकेत : अयं महाभागः ---------- अनुकरणीयंच।

अर्थ–ये महोदय भारत के स्वाधीनता संग्राम में प्रयत्नरत रहे। हमारे देश की स्वतंत्रता में इनका महान योग है। अतः पंडित जवाहर लाल महोदय हमारे स्मरणीय आदर्श और अनुकरणीय (पुरुष) हैं।

अभ्यास

1. (क) जवाहर लाल नेहरू महोदयस्य जन्म नवम्बर मासस्य चतुर्दश दिनांके 1889 तमे खिष्टाब्दे अभवत्।
   (ख) अस्य जनकः पं० मोतीलाल नेहरू महोदय माता च स्वरूप रानी आसीत्।
   (ग) ट्रिनेट्री कैम्ब्रिज विश्वविद्यालये शिक्षां गृहीत्वा सः बी०एस-सी०, एम०ए० इति उपाधिकारी अभवत्।
   (घ) जवाहरलाल महोदयस्य विवाह कमला नाम्नी कन्यया सह अभवत्।
   (ङ) सः महान क्रांतिकारी, गम्भीर विचारकः, अध्ययनशीलः, उद्भट लेखक, राजनीति शास्त्रस्य महत् विशारदः आंग्लाभाषायाञ्च पण्डितः आसीत्।

2. (क) नेहरतटे (ख) स्वगृहे
(ग) स्वाध्यायकाल (घ) इन्दिरा गान्धि
(ङ) 1939

3. (क) इसलिए वे (वह) नेहरू इस उपनाम से विख्यात हुए।
(ख) पंडित जवाहरलाल नेहरू महोदय अपने पिता के इकलौते पुत्र थे।
(ग) (वह) वे अखिल भारतीय श्रमिक संघ राष्ट्रीय महासभा के अध्यक्ष हुए।
(घ) पंडित नेहरू महोदय विश्व प्रसिद्ध नेता थे।
(ङ) हमारे देश की स्वतंत्रता में नेहरू महोदय का महान योग है।

4. (क) तदानीम् (ख) विश्वेतिहासस्य
(ग) न्यायालये (घ) प्रधानामात्यः
(ङ) एकस्मिन्नेवाभियोगे (च) उपाधिकारी

5. (क) प्रति + आगच्छत् (ख) कांग्रेस + अवसरे
(ग) इति + आदयः (घ) स्व + अध्याय
(ङ) विश्व + विद्यालय (च) काल + इव

दसवाँ पाठ :
कोयल की आवाज

संकेत : नितिनः अमितः ----------परिणामेन भविष्यति।

अर्थ–नितिन और अमित दो मित्र थे। दोनों एक दिन अपने बगीचे में फल तोड़ने को गए। अचानक दोनों को कोयल की आवाज सुनाई दी। दोनों में नितिन अंधविश्वासी था। वह बोला–''मित्र! मैं यह कोयल की आवाज सुबह ही सुबह सुन रहा हूँ। अतः मुझे यह विश्वास पैदा हो रहा है कि यह दिन (मेरे लिए) सौभाग्यशाली होगा। अवश्य ही आज धन की थैली प्राप्त करूँगा। यहाँ यह सब कुछ इसी कोयल की आवाज के परिणाम (वजह) से होगा।''

संकेतः सां वार्तां श्रुत्वा ---------- अहं प्राप्स्यामि।

अर्थ–उसकी बात को सुनकर अमित ने प्रतिवाद किया। वह भी अंध-विश्वासी था। वह प्रतिवाद करते हुए बोला–''नहीं, मित्र! मेरे समान तुम भाग्यशाली नहीं हो। यहाँ मुझे यह पूरा विश्वास है कि उस थैली को मैं प्राप्त करूँगा।

संकेतः अनेन तयो मध्ये ---------- अगच्छताम्।

अर्थ–इससे दोनों के बीच झगड़ा हो गया। धीरे-धीरे दोनों के बीच बड़ा झगड़ा

उत्पन्न हो गया। इस झगड़े से दोनों खून से लथपथ हो गए। अपने-अपने कष्ट को दूर करने के लिए वे वैद्य के पास गए।

संकेत : वैद्यः तौ ---------- अभवताम्।

अर्थ–वैद्य ने दोनों की चिकित्सा की। (और) वह पूछने लगा–''अरे बालको! तुम दोनों कैसे खून से लथपथ हो गए।'' तब दोनों ने पहले हुई घटना को बताया। जिसे सुनकर वैद्य हँसा और बोला–''अरे बालको! तुम क्या कह रहे हो? वह कोयल की आवाज कैसे सौभाग्य का सूचक है?'' अमित और नितिन ने (शर्म से) सिर झुका लिया।

संकेत : वैद्यः पुनः पुनः ---------- आगमिष्यति।

अर्थ–वैद्य बार-बार हँसते हुए बोला–''यह कोयल की आवाज तो मेरे लिए सौभाग्य की सूचना देने वाली हुई। अब तुम दोनों यदि इसी प्रकार लड़ाई करोगे तो तुम दोनों आने वाले समय में अँधेरे में होगे किंतु मुझे धन की थैली मिलती रहेगी।''

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अमितः		अमिताः
अमितम्		अमितान्
अमितेन		अमितैः
अमिताय		अमितेभ्यः

2. (क) फलानि त्रोटनाय (ख) प्रतिवादम्
   (ग) कलहम् (घ) वैद्यसमीपम्
3. अमितः ; अंधविश्वासी ; अकथयत् ; भाग्यशाली ; महयम् ; स्यूतम्
4. (क)

मित्रम्	सखा
ब्रह्मकाले	ब्रह्ममुहुर्ते
दिवसः	दिवा
एकदा	एकस्मिन्नवसरे

   (ख)

विश्वासम्	अविश्वासम्
आसीत्	अस्ति
अत्र	तत्र
अभवत्	भविष्यति
अपृच्छत्	उत्तरत्

5. (क) अहं (ख) मत्
(ग) माम् (घ) माम्
(ङ) मह्यम्

ग्यारहवाँ पाठ :
विद्यालय

संकेत : नगरात् बहिः ---------- छात्राः गृह्णन्ति।

अर्थ–नगर से बाहर सुरम्य एकांत स्थल में विद्यालय के भवन दर्शकों के चित्त को हरते हैं। विद्यालय देश का सर्वस्व है। यहाँ पुस्तकों का ही पठन-पाठन नहीं होता, अपितु सदाचार का पाठ छात्रों द्वारा पढ़ा जाता है। विनम्रता और अनुशासनता का प्राथमिक शिक्षण यहीं होता है। समाज सेवा और देशभक्ति की शिक्षा छात्र यहीं ग्रहण करते हैं।

संकेत : महाविद्यालये अध्यापकानां ---------- भद्रवेशाश्च भवन्ति।

अर्थ–महाविद्यालय में अध्यापकों की संख्या साठ और छात्रों की हजार से अधिक होती है। महाविद्यालय में अध्यापक विविध शास्त्रों में पारंगत और शिक्षण-कला में निपुण होते हैं। महाविद्यालय में दूसरे प्रान्त के भी छात्र पढ़ने के लिए आते हैं। खेलने में, दौड़ने में, तैरने में, अनुशासन में, संयम में, समाज सेवा में, देश सेवा में, प्रतियोगिता परीक्षाओं में और भाषण प्रतियोगिताओं में जो छात्र प्रथम स्थान प्राप्त करते हैं वे वार्षिकोत्सव के अवसर पर पुरस्कृत होते हैं। विद्यालय के अनुशासनपालक छात्र हृष्ट-पुष्ट शरीर वाले, विकसित शरीर वाले और शालीन वेश वाले होते हैं।

संकेत : महाविद्यालयस्य एक देशे ---------- यात्रायां प्रशस्तयति।

अर्थ–महाविद्यालय की एक देश में, प्रदेश में, गाँव-गाँव में, नगरों-नगरों में, कस्बों में, कालोनियों में एक पाठशाला 'बेसिक स्कूल' नामक अथवा शिशु सदन शिक्षाधिकारियों की संख्या स्थापित हैं। ग्राम पाठशाला के लाभ का प्रचुर मात्रा में प्रचार होता है। यहाँ बच्चों द्वारा प्रारंभिकी शिक्षा निःशुल्क प्राप्त की जाती है। जो व्यवसायी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते हैं उनकी भी साक्षरता यहीं होती है। शिशु के गुण-अवगुणों को जानकर अध्यापक उसके गुणों में समृद्धि के लिए और दोषों के निवारण के लिए प्रयत्न करते हैं। यह पाठशाला सरल जीवन निर्वाह और मितव्ययशीलता से शिक्षित करके भावी जीवन की यात्रा को प्रशस्त करती है।

संकेत : आसु ग्राम्यपाठशालासु ---------- भारतवर्षस्येति।

अर्थ–इन गाँव की पाठशालाओं में पढ़ना-लिखना और प्रारंभिक गणित की शिक्षक द्वारा शिक्षा दी जाती है। वास्तव में ग्रामीण पाठशालाओं के ह्रास का समय उपस्थित

है। नवीनयुग में नीति-रीति का अनुसरण करके चलने वाली बेसिक पाठशालाएँ सर्वत्र स्थापित हैं। प्राचीन पाठशालाएँ होते हुए भी वहाँ की स्थिति शोचनीय है। उनके इन दोषों को दूर करके प्रत्येक गाँव और प्रत्येक मौहल्ले में उनको स्थापित किया जाए। भारतवर्ष में यह महान उपकार कहाँ होता है।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	शिक्षाभ्याम्	शिक्षाभ्यः
	शिक्षयोः	शिक्षानाम्
	शिक्षयोः	शिक्षासु
	हे शिक्षे!	हे शिक्षाः।

एकवचन	द्विवचन
छात्रायाः	छात्राभ्याम्
छात्रायाः	छात्रयोः
छात्रायाम्	छात्रयोः
हे छात्रा!	हे छात्रे!

2. (क) विद्यालयः (ख) षष्टिः
   (ग) अनुशासनपालकाः (घ) ग्राम्यपाठशालानां
   (ङ) छात्र स्वयं लिखें।
3. (क) विद्यालयः देशस्य सर्वस्वम् अस्ति। अत्र केवलं पुस्तकानां पठनपाठनं भवति अपितु सदाचारस्य पाठः छात्राः पठ्यन्ते।
   (ख) देशसेवायै समाजसेवायै स्वजीविकायै छात्राः शिक्षां गृह्णन्ति ज्ञानवृद्धिश्च।
   (ग) ये छात्राः प्रतियोगितासु प्रथमं स्थानं लभन्ते, ते वार्षिकोत्सवे पुरस्कृताः भवन्ति।
   (घ) ग्राम्यपाठशालायां शिशुभिः प्रारम्भिकी शिक्षा निःशुल्कं लभन्ते।
   (ङ) प्राचीन ग्राम्यपाठशालायाः स्थितिः शोचनीयाः विचारणीयाः अस्ति।
4. (क) शुद्धं (ख) अशुद्धं
   (ग) शुद्धं (घ) अशुद्धं
5. (क) शिशुभिः ; तस्य ; गुणावगुणौ ; गुणानां
6. (क)

	लकार	पुरुष	वचन
(i)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन

	(ii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
	(iii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
	(iv)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	द्विवचन
(ख)		मूल शब्द	विभक्ति	वचन
	(i)	व्यवसाध्य	द्वितीया	एकवचन
		पाठशाला	प्रथमा	बहुवचन
		अध्यापक	तृतीया	एकवचन
		अनुशासन	षष्ठी	एकवचन
		नगर	पंचमी	एकवचन

बारहवाँ पाठ :
हिमालय

संकेत : भारतवर्षस्योत्तरस्यां ---------- कुर्वन्ति।

अर्थ–भारतवर्ष के उत्तर दिशा में उच्चतम पर्वत हिमालय है। इसकी चोटी का क्षेत्र हमेशा बर्फ से ढका रहता है। इस कारण से इसे 'बर्फ का घर' अर्थात् हिमालय कहते हैं। यह सभी पर्वतों में उच्चतम है इसलिए नगाधिराज भी कहते हैं। प्रजापति ने यज्ञांग योनित्व देखकर कल्पित यज्ञ भाग को उस हिमालय को स्वयं प्रदान किया था। हिमालय के इधर-उधर बिखरे/फैले हुए लंगूरों की शोभा चंद्रमा की किरणों से चमकती हुई रोमावलि गिरिराज शब्द को अर्थ युक्त करती है।

संकेत : अनन्तरत्नप्रभवस्य ----------निमज्जति।

अर्थ –अनन्त रत्नों को उत्पन्न करने वाले हिमालय की शोभा बर्फ के सौभाग्य/कारण से नष्ट नहीं होती है। क्योंकि एक दोष गुणों के मध्य धुल जाता है (अवगुण नहीं रहता) जैसे चंद्रमा किरणों से अंगों को धो देता है।

संकेत : अस्य हिमालयस्य ---------- मार्गं विन्दति।

अर्थ–इस हिमालय की घाटी में घूमते हुए बादलों की छाया के नीचे वर्षा के द्वारा चिंता किए हुए ऋषि आश्रय पाते हैं। वहाँ पर स्थित वनैले हाथियों का समूह खुजली को मिटाने के लिए वृक्षों पर गाल को रगड़ते हैं तब पेड़ों से निकलने वाले गोंद की गंध से हिमालय की चोटियाँ सुरभित हो जाती हैं। हिमालय की गुफाओं में प्रकाश से डरा हुआ अंधकार सूर्य को नहीं देखता है। जिसको (सूर्य को) देखकर घायल हुए शेरों के रक्त बिंदुओं से बने पंजों की कान्ति को देखकर वन मानव (आदिवासी) रास्ते खोजते हैं।

संकेत : अयं पर्वतः ---------- मानदण्डः।

अर्थ–यह पर्वत भारतवर्ष का मुकुट है। इसे भारत का प्रहरी भी कहा जाता है क्योंकि इसकी बादलों को छूती हुई ऊँची शिखरें इन्हें लाँघना दुर्लभ है। सभी शिखरों में एवरेस्ट शिखर ऊँची है। हिमालय भारतवर्ष का परोपकार करने वाला है। यह गंगा, सिन्धु ब्रह्मपुत्र और दूसरी बहुत-सी नदियों का उद्गम स्थान है। संसार से विमुखों (लोगों का) का इसकी गुफाएँ आश्रय स्थान है। हिमालय में बहुत से रत्न है। इसमें अनेक औषधियाँ भी संभव है। यह पर्वत भारत का उत्तर प्रदेश में वर्षा का कारण है। यही पर्वत हमारे देश की रक्षा करता है क्योंकि यहाँ से आक्रमण करना कठिन है। नैनीताल, मसूरी, अल्मोडा, शिमला आदि नगर इसकी तलहटी में स्थित हैं। गर्मी की ऋतु में धनिक लोग स्वास्थ्य लाभ के लिए वहाँ जाते हैं और आनंद के लिए इधर-उधर घूमते हैं। महाकवि कालिदास कुमारसमभव के आदि सर्ग में लिखा है–

उत्तर दिशा में देवताओं की आत्मा पर्वतों का राजा हिमालय नाम वाला है। यह पूरब से पश्चिम को पैमाने से नापते हुए के समान समुद्र द्वारा धोया जा रहा है।

अभ्यास

1. (ख)

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
	वृष्टी	वृष्टयः
	वृष्टी	वृष्टीः
	वृष्टिभ्याम्	वृष्टिभिः
	वृष्टिभ्याम्	वृष्टिभ्यः

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
सुरभिः		सुरभयः
सुरभिम्		सुरभीन्
सुरभ्या		सुरिभिः
सुरभ्यै/सुरभ्ये		सुरिभ्यः

2. (क) भारतवर्षस्योत्तरस्यां दिशि (ख) हिमालयपर्वतः
   (ग) हिमालयः। (घ) हिमालय पर्वतः
   (ङ) हिम + आलय
3. (क) अस्य शिखरं प्रदेशाः सदा हिमेनाच्छादिताः।
   (ख) हिमालयस्य लांगूल विक्षेपविसर्पिशोभैः चन्द्रमरीचिगौरैः बालव्यजनैः चमर्यः गिरिराजशब्दमर्थयुक्तं कुर्वन्ति।

(ग) वन्यकरिणः कपोलकण्डूः विनेतुं सरल वृक्षेषु कपोल स्थलानि घर्षन्ति, तदा वृक्षेभ्यः क्षरितेन खीरेण संजातः गन्धः हिमाद्रेः सानूनि सुरभीकरोति।

(घ) हिमालयात् गंगायाः, सिन्धो, ब्रहमपुत्रस्य नद्याः वहन्ति।

(ङ) महाकविकालिदासेन कुमारसम्भवस्य आद्ये सर्गे लिखितम्–

''अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापशै तोयनिधि वगाह्म स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।

3. (क) अशुद्धं (ख) शुद्धं

(ग) अशुद्धं (घ) शुद्धं

4. घनानां ; वृष्टिभिः ; वृक्षेषु ; वर्षन्ति ; क्षरितेन ।

5. (क)

	लकार	पुरुष	वचन
(i)	लङ् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन
(ii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	बहुवचन
(iii)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	द्विवचन
(iv)	लट् लकार	प्रथम पुरुष	एकवचन

(ख)

	मूलशब्द	विभक्ति	वचन
(i)	उत्तर	सप्तमी	एकवचन
(ii)	वर्षा	षष्ठी/सप्तमी	एकवचन
(iii)	बहुन्	षष्ठी	बहुवचन
(iv)	शोभा	तृतीया	बहुवचन
(v)	केशरि	षष्ठी	बहुवचन

तेरहवाँ पाठ :
कवि और उनकी कविता

संकेत : दर्पं ---------- यन्निकृन्तति।

अर्थ– अपनी मायूरी विद्या से साँप रूपी कवियों का मैं मायूरी देखने और सुनने का अहंकार बन्द कर सकती हूँ।

संकेत : नीलोत्पलदलश्यामां ---------- सरस्वती।

अर्थ–नील कमल की श्याम किरणों वाली सरस्वती को दण्डी सर्वशुक्ला कहते हैं। मैं बिज्जिका जानती हूँ। ये बेकार कह रहे हैं।

संकेत : भारवि ---------- बहुज्ञताः।

अर्थ–भारवि राजनीतिज्ञ हैं, कालिदास महाकवि है, भटिट व्याकरण के ज्ञाता हैं और माघ सर्वगुण सम्पन्न हैं।

संकेत : माघेन ---------- यथा

अर्थ–माघ के द्वारा नीति का निर्माण किया गया है जिनका परिक्रम सुनिश्चित है भारवि आदि कवि वानरों की तरह स्मरण मात्र हैं।

संकेत : बभूव ---------- भर्तृमेष्ठ ताम्।

अर्थ–पहले पृथ्वी पर बाल्मीकि कवि हुए बाद में पृथ्वी पर भर्तृहरि ने प्रतिष्ठा प्राप्त की। भवभूति ने पुनः इस रेखा को बढ़ाया इन सबको राजेशखर ने प्राप्त किया अर्थात् ये सभी गुण राजशेखर में हुए।

संकेत : धनवन्तरि ---------- विक्रमस्य।

अर्थ–धनवन्तरि, क्षपण, कामर, सिंह, शंकु, वेताल भट्ट, घटखारि, कालिदास वराहमिहिर ये नवरत्न विक्रमादित्य के दरबार की शोभा थे।

संकेत : यश्याश्च ---------- कौतुकाय।

अर्थ–जिस कविता रूपी कामिनी (स्त्री) कर्णफूल केयूर और हास माघ है कविकुल गुरु कालिदास जिसका विलास करते हैं। पञ्चबाण रूपी बाणभट्ट जिसे हर्षित करते हैं। ऐसी कविता किसे प्रिय नहीं होती?

अभ्यास

1. (क) मायूरी मायूरीं प्रयुज्य कवीनां दर्पं निकृन्तति।
   (ख) विज्जिका संस्कृत-विदुषी आसीत्। सा उद्घोषयति-'सर्वशुक्ला सरस्वती' इति दण्डिना वृथा प्रोक्ता।
   (ग) भारवि राजनीतिज्ञः आसीत्।
   (घ) बाल्मीकि, भवभूति, भर्तृहरि राजशेखरः।
   (ङ) मायूरी, विज्जिका, दण्डी, भारवि, कालिदासः, भट्टिः, माघः, बाल्मीकः, भर्तृहरिः, भवभूतिः, राजशेखरः, धनवन्तरिः, क्षपणः, कामरसिंहः, शंकु, वेताल, बाणभट्ट, घटखारि, वारहमिहिरः च।
2. (क) विज्जिका (ख) माघे
   (ग) भारवेरेव (घ) भवभूति
   (ङ) पञ्चबाणस्तु

3. भुजंगानाम् सर्पाणाम्
सन्ति विद्यन्ते
सरस्वती शारदा
वर्तते अस्ति
कथय वद

4. (क) मायूरी यन्निकृन्तति। (ख) कालिदासो महाकवि।
(ग) भव: कवि पुरा (घ) नृपते: सभायां
(ङ) कालिदासो विलास: (च) कविता कामिनी कौतुकाय

5. (क) (ii) षष्ठी (ख) (ii) राज्य की नीति जानने वाला
(ग) (ii) कालिदास (घ) (i) बाणभट्ट
(ङ) (ii) कविरत्न

6. (क) बाल्मीकि: रामस्य चरितम् अलिखत्।
(ख) कवि: कालिदास: श्रेष्ठ: अस्ति।
(ग) अहं विज्जिका ससंकल्पेन वदामि।
(घ) मयूरी मायूरी विद्यां प्रयुज्यते।
(ङ) कविता कवीनां श्रृंगार: अस्ति।

7. (क) विष + अविद्येव
(ख) यत् + निकृन्तति
(ग) नील + उत्पल:
(घ) माम् + अजानता
(ङ) कालिदास: + विलास:
(च) न + ऐषा

8. (क) प्रथम श्लोक का अर्थ देखें।
(ख) चतुर्थ श्लोक का अर्थ देखें।
(ग) षष्ठ श्लोक का अर्थ देखें।
(घ) सप्तम श्लोक का अर्थ देखें।